नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 342, नई दिल्ली, मंगलवार 10 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

03 महिलाओं की छठी इंद्री अधिक विकसित होती है

06 ध्यान आपके मस्तिष्क की गतिविधि को नया रूप दे सकता है

08 राउरकेला स्मार्ट सिटी में मुफ्त इंटरनेट सेवा की मांग तेज, प्रधानमंत्री को भेजा गया प्रस्ताव

नजफगढ़ में मानवता की मिसाल, टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट ने सैकड़ों जरूरतमंदों को बांटे वस्त्र

परिवहन विशेष न्यूज

नजफगढ़। सामाजिक सरोकारों को ज़मीन पर उतारते हुए टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से नजफगढ़ क्षेत्र में भव्य वस्त्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों जरूरतमंद, गरीब एवं असहाय लोगों को सम्मानपूर्वक वस्त्र वितरित किए गए, जिससे क्षेत्र में सेवा और संवेदना का संदेश गया।

ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय बाटला ने अपने संदेश में कहा, "समाज तभी मजबूत बनता है जब उसके सक्षम लोग कमजोर वर्गों का सहारा बनें। टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट का प्रयास है कि कोई भी व्यक्ति अभाव में न रहे। सेवा ही हमारा संकल्प है और सेवा ही हमारी पहचान।" उन्होंने सभी सहयोगियों और कार्यकर्ताओं का आभार जताते हुए भविष्य में और व्यापक स्तर पर सेवा कार्य करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

ट्रस्ट की महासचिव पिंकी कुंडू ने कहा कि समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सहायता पहुँचाना ही ट्रस्ट का मूल उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में लगातार कार्य कर रहा है और भविष्य में भी ऐसे सेवा कार्यक्रम जारी रहेंगे।

इस अवसर पर अभिषेक राजपूत, सुनीता शर्मा, के.के. छाबड़ा सहित ट्रस्ट के कई कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी ने पूरे समर्पण के साथ सेवा कार्य में भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

"ब्रेस्ट मिल्क खाना है, यह दवा है, और यह एक सिग्नल है।"

2008 में, बायोलॉजिस्ट केटी हिंडे ने कुछ ऐसा खोजा जिसे साइंस ने सदियों से नज़रअंदाज़ किया था: ब्रेस्ट मिल्क कोई फिक्स्ड रेसिपी नहीं है; यह लगातार बदलता हुआ मैसेज है।

कैलिफ़ोर्निया में मकाक बंदरों पर स्टडी करते समय, हिंडे ने एक अजीब पैटर्न देखा। अगर माँ का बेटा होता था, तो दूध गाढ़ा होता था, जिसमें फैट और प्रोटीन ज़्यादा होते थे (हाई-ऑक्टेन फ्यूल)। अगर बेटी होती थी, तो दूध ज़्यादा मात्रा में होता था और उसमें कैल्शियम ज़्यादा होता था। माँ के शरीर को बच्चे के लिंग के हिसाब से केमिकल फ़ॉर्मूला बदलने का पता कैसे चलता था?

इससे उन्हें ह्यूमन बायोलॉजी में सबसे दिलचस्प मैकेनिज्म रबैकवर्ड फ़्लोर का पता चला।

सालों तक, हम सोचते थे कि दूध सिर्फ़ एक ही दिशा में बहता है (माँ से बच्चे तक)। हम गलत थे। जब बच्चा ब्रेस्टफ़ीडिंग करता है, तो बनने वाला वैक्यूम बच्चे की थोड़ी सी लार को माँ के निप्पल में खींच लेता है।

यहीं पर जादू होता है: माँ का ब्रेस्ट टिश्यू उस लार का एनालिसिस करता है। यह एक बायोलॉजिकल स्कैनर है।

अगर लार में ऐसे संकेत होते हैं कि बच्चे को बुखार या इन्फेक्शन है, तो माँ का शरीर कुछ ही घंटों में उस बीमारी के लिए खास एंटीबॉडी बनाना शुरू कर देता है।

अगर बच्चा स्ट्रेस में है, तो दूध उसके मूड को बदलने के लिए अपने हार्मोन लेवल (जैसे कोर्टिसोल) को बदल देता है। दूध सुबह से रात तक बदलता रहता है। अगर बच्चा बीमार है तो यह बदल जाता है। अगर वह लड़का है या लड़की है तो भी यह बदल जाता है।

जैसा कि हिंडे ने निष्कर्ष निकाला, रब्रेस्ट मिल्क खाना है, यह दवा है, और यह एक सिग्नल है।र यह प्रकृति का सबसे एडवांस्ड कम्युनिकेशन सिस्टम है, दो शरीरों के बीच एक खामोश बातचीत जिसे आधुनिक टेक्नोलॉजी भी पूरी तरह से कॉपी नहीं कर पाई है।

ऐतिहासिक और वैज्ञानिक पुष्टि, केटी हिंडे, PhD - कम्पैरेटिव लैक्टेशन लेबोरेटरी, एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी।

आयुर्वेद ज्ञानामृत

हमारे वेदों के अनुसार प्राकृतिक उपायों से निरोगी एवं स्वस्थ रहने के 15 नियम...

1- खाना खाने के 1.30 घंटे बाद पानी पीना है।

2- पानी घूँट घूँट करके पीना है जिस से अपनी मुँह की लार पानी के साथ मिलकर पेट में जा सके, पेट में एसिड बनता है और मुँह में क्षार, दोनो पेट में बराबर मिल जाए तो कोई रोग पास नहीं आएगा।

3- पानी कभी भी ठंडा (फ्रीज़ का) नहीं पीना है।

4- सुबह उठते ही बिना कुल्ला किए तीन ग्लास पानी पीना है, रात भर जो अपने मुँह में लार है वो अमूल्य है उसको पेट में ही जाना ही चाहिए।

5- खाना, जितने आपके मुँह में दाँत है उतनी बार ही चबाना है।

6- खाना ज़मीन में पलोथी मुद्रा या उखड़ूँ बैठकर ही भोजन करना चाहिये।

7- खाने के मेन्यू में एक दूसरे के विरोधी भोजन एक साथ ना करे जैसे दूध के साथ दही, प्याज़ के साथ दूध, दही के साथ उड़द दल।

8- समुद्री नमक की जगह सेंधा नमक या काला नमक खाना चाहिए।

9- रिफाइंड तेल और डालडा ज़हर है इसकी जगह अपने इलाक़े के अनुसार सरसों, तिल, मूँगफली, नारियल का तेल उपयोग में लाए। सोयाबीन के कोई भी प्रोडक्ट खाने में ना ले इसके प्रोडक्ट को केवल सुअर पचा सकते है, आदमी में इसके पचाने के एंज़िम नहीं बनते है।

10- दोपहर के भोजन के बाद कम से कम 30 मिनट आराम करना चाहिए और शाम के भोजन बाद 500 क़दम पैदल चलना चाहिए।

11- घर में चीनी (शुगर) का उपयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि चीनी को सफ़ेद करने में 17 तरह के ज़हर (केमिकल) मिलाने पड़ते है इसकी जगह गुड़ का उपयोग

करना चाहिए और आजकल गुड बनाने में कॉस्टिक सोडा (ज़हर) मिलाकर गुड़ को सफ़ेद किया जाता है इसलिए सफ़ेद गुड़ ना खाए। प्राकृतिक गुड़ ही खाये। और प्राकृतिक गुड़ चोकलेट कलर का होता है।

12- सोते समय आपका सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ़ होना चाहिए।

13- घर में कोई भी अलूमिनियम के बर्तन, कुकर नहीं होना चाहिए। हमारे बर्तन मिट्टी, पीतल लोहा, काँसा के होने चाहिए।

14- दोपहर का भोजन 11 बजे तक व शाम का भोजन सूर्यास्त तक हो जाना चाहिए।

15- सुबह भोर के समय तक आपको देशी गाय के दूध से बनी छाछ (सेंधा नमक और ज़ीरा बिना भुना हुआ मिलाकर) पीना चाहिए।

यदि आपने ये नियम अपने जीवन में लागू कर लिए तो आपको डॉक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी

यदि आप बीमार है तो इन नियमों का पालन करने से आपके शरीर के सभी रोग (बीपी, शुगर) अगले 3 माह से लेकर 12 माह में ख़त्म हो सकती है

गधी का दूध (Donkey Milk)

गधी का दूध कुछ विशेष परिस्थितियों में गाय और भैंस के दूध से बेहतर माना जाता है—खासकर उन लोगों के लिए जिनकी कुछ खास स्वास्थ्य आवश्यकताएँ होती हैं।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि गधी के दूध की संरचना मानव माँ के दूध से काफ़ी मिलती - जुलती है, जबकि गाय और भैंस का दूध (जो जुगाली करने वाले पशुओं से आता है) उससे काफ़ी अलग होता है।

हालाँकि यह समझना बहुत ज़रूरी है कि "बेहतर (Superior)" होना पूर्ण सत्य नहीं है। यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि दूध का उपयोग किस उद्देश्य से किया जा रहा है — जैसे:

*शिशु पोषण
*दूध से एलर्जी
*वजन नियंत्रण
*या सामान्य दैनिक सेवन

1. मानव दूध से सबसे अधिक समान संरचना गधी के दूध में पानी की मात्रा बहुत अधिक होती है (लगभग 90–92%), और ठोस तत्व (fat, protein) कम होते हैं। इस कारण यह हल्का, आसानी से पचने वाला और मानव दूध जैसा बनता है।

*प्रति 100 ग्राम औसत पोषक तत्वः
*वसा (Fat)
*गधी: 1.0–1.5 g
*गाय: 3.3–3.5 g
*भैंस: 7–8 g
गधी के दूध में वसा बहुत कम होती है
*कम कैलोरी
*पाचन में आसान
* वजन नियंत्रित करने वालों के लिए बेहतर

प्रोटीन (Protein)
*गधी: 1.7–2.1 g
*गाय: 3.2–3.5 g
*भैंस: 4–5 g
मात्रा कम है, लेकिन प्रोटीन का प्रकार ज़्यादा महत्वपूर्ण है

Casein : Whey
*गधी के दूध में:- 50:50
*गाय/भैंस में 80% Casein
Casein ही दूध से एलर्जी का मुख्य कारण होता है इसलिए गधी का दूध ज़्यादा सुरक्षित माना जाता है

लैक्टोज (Lactose)
*गधी: 6.2–7.0 g
*गाय: 4.6–4.9 g
*भैंस: 4.8–5.2 g
गधी के दूध में लैक्टोज अधिक होता है
*तुरंत ऊर्जा देता है
*कैल्शियम अवशोषण बढ़ाता है
* अच्छे आंत बैक्टीरिया को बढ़ावा देता है (Prebiotic effect)
यही गुण मानव दूध में भी पाया जाता है

कैलोरी
*गधी का दूध: सबसे कम
*गाय का दूध: मध्यम
*भैंस का दूध: सबसे अधिक

2. कम एलर्जी (Hypoallergenic गुण) गाय के दूध से एलर्जी (CMPA) बच्चों में काफ़ी आम है, जिसका मुख्य कारण अधिक Casein होता है।

वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार:
गाय के दूध से एलर्जी वाले 90% से अधिक बच्चे गधी का दूध आसानी से पचा लेते हैं।
*कम Casein
*अधिक Whey
*Lysozyme जैसे जैव-सक्रिय प्रोटीन
भैंस का दूध भी एलर्जी के मामले में गाय जैसा ही है यही कारण है कि गधी का दूध:
एलर्जी वाले शिशुओं और स्तनपान न हो पाने की स्थिति में एक विकल्प के रूप में देखा जाता है (डॉक्टर की निगरानी में)

3. बेहतर पाचन क्षमता गधी के दूध में फैट कण (fat globules) छोटे होते हैं
*वसा जल्दी पचती है
*Whey प्रोटीन अधिक
*Lysozyme की मात्रा ज़्यादा
आंतों में हानिकारक बैक्टीरिया को रोकता है

गाय और भैंस के दूध में:
*फैट कण बड़े
*Casein अधिक
* कुछ लोगों के लिए पचाना कठिन

4. अन्य जैव-सक्रिय (Bioactive) फायदे
* विटामिन C की मात्रा गाय के दूध से कहीं अधिक
* B-कॉम्प्लेक्स, विटामिन E, नियासिन
* असंतृप्त फैटी एसिड (Omega-3, Omega-6 संतुलित रूप में)
*कोलेस्ट्रॉल कम
* Lactoferrin और Lysozyme अधिक

संभावित लाभ:
एंटीबैक्टीरियल
सूजन कम करने वाला
एंटीऑक्सीडेंट
त्वचा व एंटी-एजिंग प्रभाव

तुलनात्मक सारणी (प्रति 100 ग्राम)

घटक	गाय	भैंस	मानव दूध
पानी (%)	90–92	87–88	87–88
वसा (g)	1.0–1.5	3.3–3.5	3.5–4.5
प्रोटीन (g)	1.7–2.1	3.2–3.5	4–5
लैक्टोज (g)	6.2–7.0	4.6–4.9	4.8–5.2
Casein:Whey	₹50:50	₹80:20	₹80:20
	₹40:60	एलर्जी	बहुत कम
	अधिक	अधिक	बहुत कम

महत्वपूर्ण सीमाएँ
1. कैल्शियम, विटामिन B12 और कुल प्रोटीन कम
2. स्वस्थ वयस्कों के लिए हड्डी/मांसपेशी निर्माण में आदर्श नहीं
3. उत्पादन बहुत कम कीमत बहुत ज़्यादा
4. भारत में उपलब्धता सीमित
5. सामान्य भारतीय परिवार के लिए गाय या टोंड भैंस का दूध अधिक व्यावहारिक और संतुलित है

निष्कर्ष:- गधी का दूध सामान्य दूध का विकल्प नहीं, बल्कि एक विशेष चिकित्सीय दूध है।

यह विशेष रूप से उपयोगी है: गाय के दूध से एलर्जी वाले शिशुओं/बच्चों के लिए मानव दूध जैसा पोषण चाहने वालों के लिए कम वसा, हल्का और अत्यधिक पचने योग्य दूध चाहने वालों के लिए लेकिन स्वस्थ वयस्कों के लिए रोज़मर्रा के दूध के रूप में यह "सर्वोत्तम" नहीं, बल्कि विशेष परिस्थितियों में श्रेष्ठ है।

भारत में प्रोटीन सप्लीमेंट्स को लेकर गंभीर चिंताएँ और अनेक रिपोर्टें सामने आई हैं।

इनमें यह पाया गया है कि बाज़ार में उपलब्ध कई प्रोटीन सप्लीमेंट्स—चाहे वे स्थानीय कंपनियों के हों या कुछ फार्मास्यूटिकल/न्यूट्रास्यूटिकल कंपनियों से जुड़े ब्रांड—नकली (spurious), मिलावटी, गलत लेबल वाले या हानिकारक पदार्थों से युक्त हो सकते हैं।

"सिटिज़न प्रोटीन प्रोजेक्ट" (2024): एक प्रमुख वैज्ञानिक अध्ययन

वर्ष 2024 में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण अध्ययन, जिसे "Citizen Protein Project" कहा गया और जो प्रतिष्ठित peer-reviewed जर्नल Medicine में प्रकाशित हुआ, में भारत में बिकने वाले 36 लोकप्रिय प्रोटीन सप्लीमेंट ब्रांड्स की जाँच की गई।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित थे:

लगभग 70% उत्पादों में प्रोटीन की मात्रा गलत लेबल की गई थी।

कई उत्पादों में घोषित मात्रा की तुलना में कहीं कम प्रोटीन पाया गया—कुछ में तो केवल आधी मात्रा।

कुछ नमूनों में सस्ते अमीनो एसिड मिलाकर कृत्रिम रूप से प्रोटीन स्तर बढ़ाया गया था।

लगभग 14% नमूनों में अफ्लाटॉक्सिन जैसे फंगल टॉक्सिन पाए गए, जो ज्ञात कैंसरकारक (carcinogenic) होते हैं।

8% नमूनों में कीटनाशकों के अवशेष (pesticide residues) पाए गए।

कई नमूनों में भारी धातुएँ (Heavy Metals) पाई गईं:
लगभग 75% में सीसा (Lead)
लगभग 28% में कैडमियम
कुछ में आर्सेनिक

ये तत्व दीर्घकालिक रूप से यकृत, गुर्दे और तंत्रिका तंत्र को गंभीर क्षति पहुँचा सकते हैं।

यह समस्या केवल भारतीय ब्रांड्स तक सीमित नहीं पाई गई; हालांकि गुणवत्ता की तुलना में कुछ आयातित या बहुराष्ट्रीय ब्रांड अपेक्षाकृत बेहतर पाए गए।

प्रचारित ब्रांड्स पर उठे प्रश्न
कुछ अत्यधिक प्रचारित ब्रांड्स—जिनमें Protinex, Ensure जैसे नाम (जिनका विपणन बड़े पैमाने पर, कभी-कभी फार्मास्यूटिकल कंपनियों द्वारा भी किया जाता है)—पर सार्वजनिक चर्चाओं और परीक्षणों में अपेक्षा से कम गुणवत्ता को लेकर प्रश्न उठे हैं।

नकली सप्लीमेंट्स के अवैध कारोबार पर पुलिस कार्रवाई

प्रयोगशाला परीक्षणों के अतिरिक्त, वास्तविक मामलों में नकली सप्लीमेंट निर्माण के भंडाफोड़ भी सामने आए हैं:

2024 के अंत में, नोएडा पुलिस ने एक अवैध फैक्ट्री पर छापा मारा, जहाँ:

स्टार्च, चॉक जैसे भराव पदार्थ मिलाकर नकली प्रोटीन पाउडर बनाया जा रहा था

प्रतिष्ठित ब्रांड्स की नकल कर इन्हें ऑनलाइन बेचा जा रहा था

इस मामले में गिरफ़्तारियाँ हुईं और एक उपभोक्ता में लिवर से जुड़ी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ दर्ज की गईं

2025 में बुलंदशहर सहित अन्य स्थानों पर भी इसी प्रकार की छापेमारी में नकली सप्लीमेंट्स बरामद हुए, जो भ्रामक दावों और खाद्य सुरक्षा क़ानूनों के उल्लंघन में शामिल थे।

पुरानी रिपोर्टें और व्यापक समस्या
2015 से 2023 के बीच की रिपोर्टों में अनुमान लगाया गया कि भारत में बिकने वाले 60–70% आहार सप्लीमेंट्स (जिसमें प्रोटीन भी शामिल हैं):

नकली
अपंजीकृत
या अवैध रूप से निर्मित
थे, जिन्हें प्रायः अनियंत्रित और गैर-लाइसेंसधारी संस्थाओं द्वारा बनाया या वितरित किया गया।

नियामक संस्थाओं की चेतावनी
FSSAI (भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण) ने प्रोटीन सप्लीमेंट्स पर:
भ्रामक विज्ञापनों
झूठे स्वास्थ्य दावों
गलत लेबलिंग
के विरुद्ध कड़े नियम और कार्यवाहियाँ शुरू की हैं।

ICMR (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) भी नियमित रूप से यह सलाह देता है कि:

सामान्य स्वस्थ व्यक्तियों को प्रोटीन सप्लीमेंट्स की नियमित आवश्यकता नहीं होती; संपूर्ण और संतुलित भोजन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

निष्कर्ष
भारत में प्रोटीन सप्लीमेंट्स का बाज़ार तेज़ी से बढ़ा है, परंतु इसके साथ-साथ गुणवत्ता, सुरक्षा और पारदर्शिता को लेकर गंभीर जोखिम भी सामने आए हैं।

ऐसे में बिना चिकित्सकीय सलाह और प्रमाणित आवश्यकता के प्रोटीन सप्लीमेंट्स का सेवन न केवल अनावश्यक है, बल्कि संभावित रूप से स्वास्थ्य के लिए खतरनाक भी हो सकता है।

महिलाओं की छठी इंद्री अधिक विकसित होती है

पिंकी कुंडू

भारतीय परम्परा में महिलाओं को देवी कहा जाता है, इसके अनेक कारण है। इसका एक कारण यह भी है की स्त्रियों में अतीन्द्रिय क्षमता पुरुष की अपेक्षा अधिक विकसित होती है।इसके विकास की संभावना अधिक होती है। कम प्रयास से अधिक सक्षम हो जाती है। इनमे प्रकृति की शक्ति अधिक आसानी से और शीघ्र स्थान ग्रहण करती है। इनमे सहानुभूति, भावुकता, एकाग्रता, सहनशीलता, करुणा आदि अधिक होती है, जो इन्हें देवी स्वरुप प्रदान करता है।

अब पाश्चात्य विज्ञान भी धीरे धीरे इसे प्रमाणित कर रहा है। ऐसा कहा जाता है कि महिलाओं में छठी इंद्रिय होती है। लेकिन अब वैज्ञानिकों ने भी इस बात की पुष्टि कर दी है। ऑस्ट्रेलिया में हुए एक ताज़ा अध्ययन के मुताबिक महिलाएं किसी अपरिचित पुरुष का महज चेहरा भर देखकर बता सकती हैं कि वह विश्वास करने योग्य है या नहीं। खास बात यह है कि महिलाओं की तुलना में पुरुषों में इस क्षमता का अभाव होता है। द जर्नल बायोलॉजी लैटर्स में प्रकाशित इस अध्ययन के मुताबिक महिलाओं में पुरुषों को देखकर उनका आकलन कर लेने की क्षमता होती है।

यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के एआरसी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के गिलीयन रोड्स के नेतृत्व में यह अध्ययन किया गया। अध्ययन के मुताबिक महिलाएं मानती हैं कि ज्यादा मर्दाना दिखने वाले पुरुष विश्वासपात्र नहीं होते हैं। महिलाओं के इस नजरिए में आकर्षण कोई भूमिका अदा नहीं करता है। अध्ययन के दौरान 34 महिलाओं और 34 पुरुषों को 189 वयस्कों के रंगीन फोटोग्राफ दिखाकर उनकी विश्वसनीयता का आकलन करने को कहा गया। अध्ययन में महिला प्रतिभागियों ने पुरुषों की तुलना में कहीं ज्यादा सटीक जवाब दिए। वैज्ञानिकों के अनुसार विश्वसनीयता आपसी संबंधों के लिहाज से बेहद अहम है।

प्रकृति का अद्भुत विज्ञान तंत्र के एक मुख्य मार्ग कुंडलिनी जागरण में सम्भोग से समाधि की बात कही गयी है, यद्यपि अन्य रास्ते भी होते हैं, किन्तु इस मार्ग की विशेषता यह है की यह वही कार्य कुछ ही समय में संपन्न कर सकता है जिसे अन्य मार्ग वर्षों में शायद कर पायें। इसकी पद्धति पूर्ण वैज्ञानिक है और शारीरिक ऊर्जा को इसका माध्यम बनाया जाता है। धनात्मक और ऋणात्मक की आपसी शार्ट सर्किट से उत्पन्न अत्यंत तीव्र ऊर्जा को पतित होने से रोककर उसे उर्ध्वमुखी करके इस लक्ष्य को प्राप्त किया जाता है, यद्यपि यह अत्यंत कठिन और खतरनाक मार्ग भी है जिसमे ऊर्जा न सँभालने पर पूरी सर्किट के ही भ्रष्ट होने का खतरा होता है, पर यह मार्ग वह उपलब्धियां कुछ ही समय में दे सकता है, जिसे पाने में अन्य मार्गों से वर्षों समय लगता है और निश्चितता भी नहीं होती की मिलेगा ही। यह मार्ग यद्यपि अत्यंत विवादास्पद रहा है किन्तु इसकी वैज्ञानिकता संदेह से परे है और सिद्धांत पूरी तरह प्रकृति के नियमो के अनुकूल है। तभी तो प्रकृति पर नियंत्रण का यह सबसे उत्कृष्ट माध्यम है ,और किसी न किसी रूप में अन्य माध्यमो में भी अपनाया जाता है।

सामान्य पूजा-अनुष्ठानो में भी ब्रह्मचर्य के पालन की हिदायत दी जाती है, उसका भी वही उद्देश्य होता है की ऊर्जा संरक्षित करके उसे उर्ध्वमुखी किया जाए। तंत्र में अंतर बस इतना ही आता है की इस ऊर्जा को तीव्र से तीव्रतर करके रोका और उर्ध्वमुखी किया जाता है, इस हेतु प्रकृति की ऋणात्मक शक्ति को सहायक बनाया जाता है तीव्र ऊर्जा उत्पादन में।

सम्भोग और समाधि एक ही ऊर्जा के भिन्न तल हैं। निम्न तल यानी मूलाधार चक्र पर जब जीवन ऊर्जा की अभिव्यक्ति होती है तो यह संभोग बन जाता है। उच्च तल पर समान उर्जा भगवत्ता बन जाती है जिसे समाधि कहा गया है। यौन ऊर्जा का अर्थ वीर्य से नही है। वीर्य मात्र यौन ऊर्जा का भौतिक तल है। यौन ऊर्जा का वाहक है वीर्य। यौन ऊर्जा ऊपर गति करती है। इसका यह अर्थ नही है वीर्य ऊपर चढ़ जाता है। वीर्य के ऊपर चढने का कोई उपाय नही है। यह मनस ऊर्जा है और अदृश्य है। इसका केवल अनुभव होता है। जैसे हवा अदृश्य है और उसका केवल अनुभव होता है। हमारी रीढ़ की हड्डी में सूक्ष्म नाड़िया हैं - इडा- पिंगला- सुषुम्ना. यह मनस उर्जा सुषुम्ना के द्वारा ऊपर का अभियान करती है। इसका सामना सात स्टेशनों से पड़ता है जिसे चक्र कहते हैं और इस पूरी ऊर्जा की यात्रा को 'कुण्डलिनी जागरण' कहते हैं।

ध्यान और तंत्र की विधियों द्वारा इस ऊर्जा को ऊपर ले जाया जाता है। प्रत्येक चक्र से शरीर जुडा हुआ है और हर दूसरा शरीर विपरीत है। अर्थात पुरुष का दुसरा शरीर स्त्री का है और स्त्री का दुसरा शरीर पुरुष का। इसी लिए स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक धैर्यवान होती हैं क्यूँ की उनका दूसरा शरीर पुरुष का है जो अपेक्षाकृत मजबूत है। अर्धनारीश्वर की प्रतिमा यही सन्देश देती है।

प्रत्येक शरीर में सात चक्रों से जुड़े सात शरीर होते हैं। एक -एक चक्र के जागरण के साथ एक एक शरीर सक्रीय होने लगता है। शरीर परस्पर मिल जाते हैं। कुंडली जागरण की यह प्रक्रिया ' अंतर सम्भोग' कही जाती है क्यूँ की एक स्त्री शरीर अपने ही पुरुष शरीर से संयुक्त हो जाती है, इसमें ऊर्जा नष्ट नही होती बल्कि ऊर्जा का एक अनन्य वर्तुल बन जाता है जो आध्यात्मिक जागरण और आंतरिक आनंद के रूप में परिलक्षित होता है।

योगियों के चेहरे पर खुमारी, तेज, दिव्यता का यही कारण है। इस अंतर सम्भोग के अनेक दिव्य परिणाम होते हैं। बाहर के संभोग से अनंत गुना आनंद और तृप्ति उपलब्ध होती है। प्रत्येक चक्र के जागरण और शरीरो के मिलन से आनंद का खजाना मिलने लगता है। बाहर संभोग की इच्छा समाप्त हो जाती है। इसी को ब्रह्मचर्य कहते हैं। व्यक्ति ब्रह्म जैसा हो जाता है। उसकी चर्या ब्रह्म जैसी हो जाती है। शिव लिंग का प्रतीक इसी अंतर सम्भोग को परिलक्षित करता है।

चक्रों के जगने के साथ उसके सम्बंधित सिद्धियाँ मिल जाती हैं- जैसे ह्रदय चक्र के जगने के साथ विराट करुना व प्रेम के आनंद का भान होने लगता है। आज्ञा चक्र के जगने के साथ व्यक्ति तीनो कालो को जानने वाला हो जाता है। विशुद्ध चक्र के जागने के साथ व्यक्ति जो बोले वह सत्य होने लगता है। प्राचीन आशीर्वाद की कथाये उन्ही ऋषियों की क्षमताये हैं जिनका विशुद्ध चक्र सक्रीय हो गया था। सहस्रार चक्र आखिरी चक्र है जिसके सक्रीय होते ही व्यक्ति परम धन्यता को उपलब्ध हो जाता है। तब वह ब्रह्म ही हो जाता है- 'अहम्ब्रह्मास्मि' का उद्घोष। उसके शक्ति के अंतर्गत समस्त सृष्टि की शक्तियां उसके पास आ जाती हैं लेकिन वह इनका उपयोग नही करता क्यूँ की उसे यह भी बोध हो जाता है की सृष्टि व इसके नियम उसी के द्वारा बनाये गये हैं।

परम ज्ञान की अवस्था को समाधि कहा गया है। समाधि का अर्थ है समाधान। इसकी अनुभूति चौथे शरीर से ही होने लगती है। चौथे शरीर से ही परमात्मा का ओमकार स्वरूप पकड़ में आने लगता है।

उज्जैन में शिव नवरात्रि शुरू, क्यों खास है ये 9 रातें !

पिंकी कुंडू

फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष की पंचमी से शुरू होने वाली यह 9 रात्रियां बेहद खास मानी जाती है। इस दौरान भगवान शिव का श्रृंगार अलग - अलग रूपों में किया जाता है।

महाकाल की नगरी में नवरात्रियों की शुरुआत फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की पंचमी से होती है, साथ ही इनका समापन महाशिवरात्रि पर होता है।

इन नौ रात्रियों में भगवान महाकाल का अलग - अलग रूपों में श्रृंगार किया जाता है। प्रभु को कई प्रकार से सजाया जाता है।

अंतिम दिन प्रभु दूल्हा बनते हैं और नगर भ्रमण को भी निकलते हैं। फाल्गुन महीने में मनाई जाने वाली शिव नवरात्रि का खास महत्व उज्जैन में माना जाता है, क्योंकि यह शहर स्वयं महादेव की साक्षात उपस्थिति से जुड़ा हुआ है।

यहां शिव नवरात्रि केवल व्रत या पूजा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पूरे नौ दिन बाबा महाकाल की विशेष आराधना, नियम और परंपराओं के साथ मनाए जाते हैं।

भक्त अलग-अलग रूपों में भगवान शिव की पूजा करते हैं और हर दिन की पूजा का अपना अलग महत्व होता है। आइए जानते हैं कि किस दिन भगवान शिव के किस स्वरूप का दर्शन होगा।

शिव नवरात्रि का पहला दिन शिव नवरात्रि के पहले दिन यानी 06 फरवरी को महाकाल भगवान का भांग व दिव्य चंदन श्रृंगार किया जाएगा। इस श्रृंगार में भस्म, भांग और शुद्ध चंदन का उपयोग होता है, जो भगवान शिव के वैराग्य और औघड़ स्वरूप को दर्शाता है। इसके साथ ही इस दिन भक्त व्रत का संकल्प लेते हैं। इस दिन महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का विशेष जलाभिषेक किया जाता है। दूध, दही, घी, शहद और गंगाजल से अभिषेक कर भगवान शिव से मन की शुद्धि और आत्मबल की कामना की जाती है। कई श्रद्धालु इस दिन से लगातार नौ दिन तक उपवास रखते हैं।

शिव नवरात्रि का दूसरा दिन इसके बाद 07 फरवरी को नवीन श्रृंगार होगा। इस दिन भगवान को नए वस्त्र, आभूषण और विशेष श्रृंगार सामग्री अर्पित की जाती है। यह श्रृंगार नए आरंभ और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है।

शिव नवरात्रि का तीसरा दिन 08 फरवरी को महाकाल का शेषनाग श्रृंगार किया जाएगा। इस रूप में भगवान शिव को शेषनाग के साथ दर्शाया जाता है, जो सृष्टि की रक्षा और संतुलन का संकेत देता है।

शिव नवरात्रि का चौथा दिन 09 फरवरी को होने वाला घटाटोप श्रृंगार शिव के रौद्र और रहस्यमय स्वरूप को दिखाता है। इस दिन मंदिर में विशेष सजावट की जाती है और वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो जाता है।

शिव नवरात्रि का पांचवां दिन इसके बाद 10 फरवरी को छबीना श्रृंगार किया जाएगा। इस श्रृंगार में भगवान शिव का आकर्षक और मनोहारी रूप देखने को मिलता है, जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

शिव नवरात्रि का छठा दिन 11 फरवरी को महाकाल का होलकर श्रृंगार होगा। यह श्रृंगार ऐतिहासिक परंपराओं से जुड़ा माना जाता है और इसमें शाही अंदाज देखने को मिलता है।

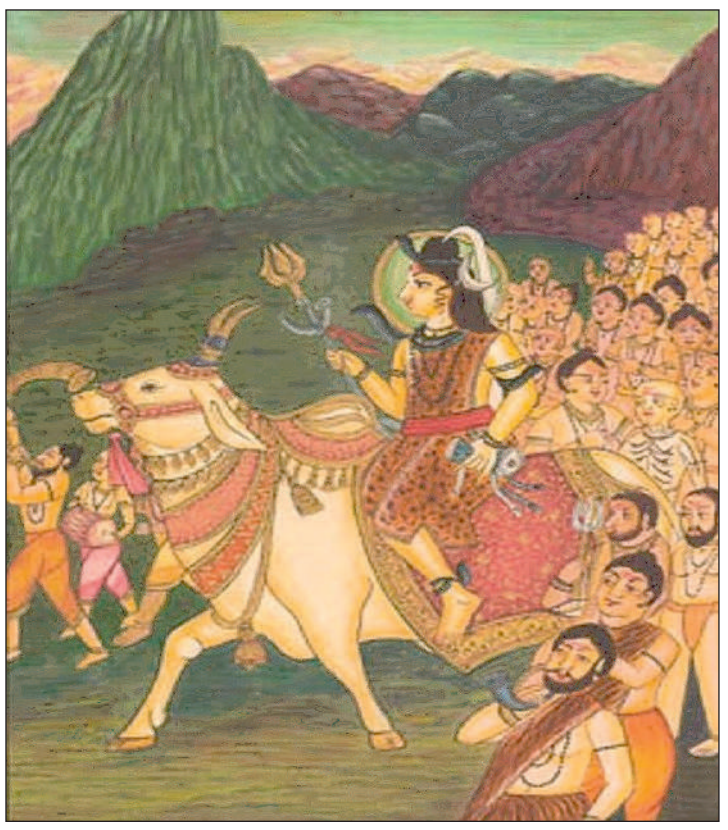

शिव नवरात्रि का सातवां दिन 12 फरवरी को मनमहेश श्रृंगार किया जाएगा। इस दिन भगवान शिव को अत्यंत शांत और करुणामय रूप में सजाया जाता है, जो भक्तों के मन को विशेष शांति देता है।

शिव नवरात्रि का आठवां दिन इसके अगले दिन 13 फरवरी को उमा महेश श्रृंगार होगा। इस रूप में भगवान शिव माता पार्वती के साथ विराजमान होते हैं। यह श्रृंगार दांपत्य सुख और पारिवारिक जीवन के लिए विशेष माना जाता है।

शिव नवरात्रि का नौवां दिन 14 फरवरी को महाकाल का शिवतांडव श्रृंगार किया जाएगा। इस दिन भगवान शिव के तांडव रूप का दर्शन होता है, जो शक्ति, ऊर्जा और विनाश के साथ सृजन का प्रतीक है।

अंतिम दिन महाशिवरात्रि शिव नवरात्रि के अंतिम दिन यानी 15 फरवरी को सप्तधान्य श्रृंगार होगा। इसके साथ ही इस दिन बाबा चक्रवती राजा और दूल्हे की पोशाक में सजाए जाते हैं। इस दिन प्रभु का विवाह होता है। यह दिन महाशिवरात्रि होता है। इस श्रृंगार में सात प्रकार के अनाज अर्पित किए जाते हैं, जो समृद्धि, अन्नपूर्णा कृपा और खुशहाली का संकेत माने जाते हैं। शिव नवरात्रि के अंतिम दिन व्रत का पारण किया जाता है। इस दिन दान-पुण्य का खास महत्व होता है।

उज्जैन में शिव नवरात्रि इसलिए भी खास मानी जाती है क्योंकि यहां महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है, जहां शिव स्वयं कालों के भी काल माने जाते हैं।

मान्यता है कि यहां सच्चे मन से की गई पूजा जल्दी फल देती है। शिव नवरात्रि के दौरान उज्जैन में साधना, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनोखा संगम देखने को मिलता है।

भारत में सिर्फ उज्जैन में मनाई जाती है शिव नवरात्रि, कहते है इन 9 दिनों जिसने भी किए महाकाल के दर्शन उसका बेड़ा पार

क्या शिव और पार्वती का प्रेम 'ईश्वर और शक्ति' के मिलन का रूपक है ?

पिंकी कुंडू

क्या शिव और पार्वती का प्रेम 'ईश्वर और शक्ति' के मिलन का रूपक है ?

* क्या हर प्रेम आध्यात्मिक हो सकता है? बहुत ही प्यारा प्रश्न है।

* जी हां, शिव और पार्वती का प्रेम ईश्वर और शक्ति का मिलन हैं। शिव ईश्वर हैं और पार्वती उनकी शक्ति।

माता पार्वती ही भगवान शिव को वैराग्य से संसार की ओर ले जाती हैं। शिव यदि सूर्य हैं तो शक्ति उनकी किरण, शिव समुद्र हैं तो शक्ति लहर, यह एक ही हैं अलग नहीं।

प्रेम है ही एक अद्भुत चीज, वास्तविक प्रेम तो तभी होता है जब आपका आध्यात्मिक जुड़ाव हो।

यह ही प्रैक्टिकल भी है, यदि आपके जीवन में कोई ना हो तो मन वैरागी हो जाता, सांसारिक जीवन में रुचि नहीं होती लेकिन जैसे ही आप अपनी प्रेयसी के संपर्क में आते हैं तो एक अलग ऊर्जा आती है, तब आप सांसारिक जीवन में अधिक सक्रिय भी हो जाते हैं, चाहे आपकी उससे ज्यादा बात ना भी होती हो।

आजकल क्रश शब्द का बड़ा चलन है, क्रश केवल कुछ समय तक ही रहता जो केवल आकर्षण है.. लेकिन प्रेम तो सदैव रहता है, चाहे आप उससे डायरेक्ट रिलेशनशिप में ना लेकिन उसकी उपस्थिति से आनंद की अनुभूति होती है।

प्रेम एक गहरा आत्मिक जुड़ाव है।

जब भगवान बने सेवक: भक्त सखू बाई की अद्भुत कथा !

पिंकी कुंडू

सखू बाई का विवाह एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ धन - धान्य की कमी तो नहीं थी, पर 'भाव' का अकाल था। उनकी सास (घर की मुखिया) का स्वभाव वज्र से भी कठोर था। उन्हें सखू बाई की विठ्ठल - भक्ति फूटी आँख नहीं सुहाती थी।

जब भी सखू के मुख से ₹विठ्ठल... विठ्ठल..." का स्वर निकलता, सास का क्रोध भड़क उठता।

"कामचोर कहीं की ! दिन भर भजन का बहाना करती है ताकि काम न करना पड़े,₹ सास के ताने सखू के हृदय को छलनी कर देते।

सखू बाई चुपचाप सब सह लेतीं। वे जानती थीं कि उनका विठ्ठल सब देख रहा है। सास उन्हें जानबूझकर घर का सबसे कठिन काम देतीं, ताकि उन्हें भगवान का नाम लेने का समय ही न मिले।

वह काली, कष्टदायी रात एक दिन की बात है। घर में बहुत सारा अनाज पीसना था। दिन भर हाड़-तोड़ मेहनत कराने के बाद भी सास का मन नहीं भरा। रात हुई, तो उन्होंने सखू बाई के सामने अनाज का पहाड़ जैसा ढेर लगा दिया और आदेश दिया: ₹जब तक यह पूरा अनाज पिस न जाए, उठना मत ! अगर सुबह तक काम अधूरा रहा, तो घर में पैर मत रखना।"

अंधेरी रात थी। पूरा गाँव नींद की आगोश में था, लेकिन सखू बाई भारी - भरकम पत्थर की चक्की के पास बैठी थीं। दिन भर की थकान से शरीर चूर-चूर हो रहा था, आँखों में नींद के झोंके आ रहे थे, और हाथों में छाले पड़ गए थे।

आर्तनाद और समाधि सखू बाई ने चक्की का हत्था पकड़ा और घुमाना शुरू किया। घर-घर-घर... चक्की की आवाज रात के सन्नाटे को चीर रही थी। हर चक्कर के साथ उनके मुख से निकलता — ₹विठ्ठल... मेरे पांडुरंगा..."

हाथ चलते रहे, लेकिन मन पंढरपुर पहुँच गया। उन्हें लगा कि वे चंद्रभागा नदी के तट पर खड़ी हैं और सामने ईंट पर खड़े सांवले विठ्ठल उन्हें देख रहे हैं।

शरीर की पीड़ा हद से गुजर गई। अत्यधिक थकावट के कारण सखू बाई का सिर चक्की के पाट पर ही झुक गया। वे वहीँ बेसुध हो गईं। नाम - स्मरण करते - करते वे एक गहरी समाधि में चली गईं, जहाँ न दुख था, न सुख, बस विठ्ठल थे।

करुणानिधान का आगमन भक्त पुकारे और भगवान न आएं, यह तो हो ही नहीं सकता ! त्रिभुवन के स्वामी, जो बैकुंठ में लक्ष्मी जी के साथ विराजते हैं, वे अपनी इस भोली भक्त की पीड़ा देख न सके।

उसी क्षण, उस छोटी सी कुटिया में एक चमत्कार हुआ। साक्षात्भगवान विठ्ठल वहां प्रकट हुए। लेकिन उन्होंने चतुर्भुज रूप नहीं

धरा। उन्होंने देखा कि उनकी भक्त का काम अधूरा है और सास का डर उसे सता रहा है तब, भगवान विठ्ठल ने स्वयं 'सखू बाई' का रूप धारण कर लिया ! वही साड़ी, वही चेहरा, वही भाव। जगत के पालनहार ने उस भारी पत्थर की चक्की को अपने कोमल हाथों से पकड़ा और पीसना शुरू किया।

सोचिये ! जिसके इशारे पर सृष्टि चलती है, वह आज अपनी भक्त के लिए गेहूं पीस रहा था। पूरी रात चक्की चलती रही। भगवान बड़े प्रेम से अनाज पीसते रहे और सखू बाई पास ही निश्चिंत होकर सोती रहीं।

भगवान मानो कह रहे थे — ₹तू विश्राम कर मेरी लाडली, तेरे हिस्से का कष्ट अब मेरा है।"

सुबह का चमत्कार और हृदय परिवर्तन प्रभात की पहली किरण के साथ ही विठ्ठल अंतर्ध्यान हो गए। सखू बाई की आँख खुली तो वे घबरा गईं।

₹हे भगवान ! मैं तो सो गई थी। अगर काम नहीं हुआ तो सासू माँ मुझे घर से निकाल देंगी। लेकिन जैसे ही उनकी नजर टोकरियों पर पड़ी, वे दंग रह गईं। सारा अनाज न केवल पिसा हुआ था, बल्कि आटा इतना बारीक और सुंदर था जैसा वे कभी पीस ही नहीं सकती थीं तभी सास वहां आईं। वे क्रोध में चिल्लाने ही वाली थीं कि ₹कामचोर, तू सो रही है !₹ लेकिन जब उन्होंने देखा कि काम पूरा हो चुका है और सखू बाई के चेहरे पर एक अलौकिक तेज है, तो वे ठिठक गईं। वह समझ गईं कि एक थकी - हारी अकेली स्त्री रात भर में इतना काम कर ही नहीं सकती। सास ने सखू की आँखों में देखा — वहाँ न डर था, न शिकायत, बस कृतज्ञता के आंसू थे।

उस कठोर मुखिया का पत्थर दिल मोम की तरह पिघल गया। उन्हें अहसास हो गया कि सखू कोई साधारण बहू नहीं, बल्कि ईश्वर की लाडली है। वह सखू के चरणों में गिर पड़ीं और रोते हुए बोलीं: ₹बेटी, मैंने तुझे दासी समझा, पर तू तो देवी है। जिसे स्वयं विठ्ठल का संरक्षण प्राप्त हो, उसे मैं कष्ट देने वाली कौन होती हूँ?"

उस दिन के बाद, उस घर में सखू बाई को कभी रोका नहीं गया। सखू बाई ने कभी नहीं कहा कि भगवान आए थे, वे तो बस इतना मानती थीं कि यह उनके स्वामी की दया है।

सखू बाई की यह कथा हमें सिखाती है कि भक्ति का अर्थ पूजा-पाठ का दिखावा नहीं है। यदि आप अपने कर्म और कष्ट में भी ईश्वर को याद रखते हैं, तो वह आपके सबसे कठिन कामों को भी अपने कंधे पर उठा लेते हैं।

अधिकारी समाधान शिविर की हर शिकायत का यथाशीघ्र करें उचित निपटारा : डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

परिवहन विशेश न्यूज

एक छत के नीचे सभी विभागों से संबंधित हर शिकायत के तुरंत निपटारे के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे समाधान शिविर

झज्जर, 9 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में प्राप्त हर शिकायत का यथाशीघ्र उचित निपटारा सुनिश्चित करें। समाधान शिविर में हर विभाग से संबंधित हर शिकायत का एक छत के नीचे तुरंत निपटारा करने का लक्ष्य रखा गया है। सोमवार को जिला स्तर पर आयोजित समाधान शिविर में आठ शिकायतें दर्ज की गई । डीसी ने सभी शिकायतों का संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को त्वरित समाधान के निर्देश दिए। उपायुक्त स्थानीय लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित समाधान शिविर में नागरिकों की समस्याओं की सुनवाई कर रहे थे। इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, सीटीएम नमिता कुमारी, सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट, डीआरओ मनबीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी प्रणय कुमार, सीएम विंडों एमिनेंट पर्सन सज्जन गुर्जर व कष्ट निवारण कमेटी के मेंबर गौरव सैनी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा हर सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय एवं बहादुरगढ़ , बेरी व बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। उपायुक्त पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविरों की शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद करें। अधिकारी नागरिक को शिकायत निपटारे के लिए विभाग द्वारा की जा रही कार्यवाही की जानकारी देकर संतुष्ट करें, ताकि शिकायत का स्थायी समाधान हो सके।

डीसी ने की अन्न भंडारण से जुड़ी योजना की प्रगति की समीक्षा

योजना के क्रियान्वयन के लिए डीसी ने दिए कमेटी गठित करने के निर्देश

झज्जर, 09 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने सोमवार को लघु सचिवालय में सरकार द्वारा प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पैक्स)की भागीदारी के साथ अन्न भंडारण की महत्वाकांक्षी योजना की प्रगति की समीक्षा की । दुनिया की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना के तहत गोदामों का निर्माण होना है। गोदाम के निर्माण में झज्जर जिला अहम भूमिका निभाएगा। उन्होंने अधिकारियों को इस परियोजना को गंभीरता और समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अन्न भंडारण की सुविधा स्थानीय किसानों के लिए लाभदायक साबित होगी। डी सी ने इस कार्य की नियमित मॉनिटरिंग और गति प्रदान करने के लिए अधिकारियों की कमेटी गठित करने के निर्देश दिए।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने यह निर्देश सोमवार को लघु सचिवालय में प्राथमिक कृषि समितियों की बैठक में अन्न भंडारण योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए दिए। बैठक में सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां झज्जर (मीटिंग संयोजक), महाप्रबंधक सहकारी बैंक झज्जर सहित खाद्य आपूर्ति विभाग, केंद्रीय भंडारण निगम, राज्य भंडारण निगम, नाबार्ड तथा भारतीय खाद्य निगम के अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक में योजना के तहत जिले में प्रस्तावित गोदामों के निर्माण को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। उपायुक्त एवं समिति अध्यक्ष ने सभी संबंधित हितधारकों से फीडबैक लिया और कार्य की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए एक निरीक्षण समिति का भी गठन करने को कहा।

उपायुक्त ने कहा कि लक्ष्य यह है कि कम समय में गोदामों का निर्माण कार्य पूरा कराकर इस महत्वाकांक्षी योजना को धरातल पर उतारा जाए, ताकि भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय की पहल सहकारी से समृद्धि को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए योजना को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर अधिकारियों ने जिले में भंडारण क्षमता बढ़ाने, किसानों को बेहतर सुविधाएं देने और खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने को लेकर अपने-अपने सुझाव भी रखे।

हरियाणा खेल उपकरण प्रावधान योजना 2025-26 पंचायतों व नगर निकायों को मिलेगा खेल सामान, 31 मार्च तक भेजें मांग

झज्जर, 09 फरवरी। राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों एवं नगर निकायों के युवाओं को खेलों के प्रति आकर्षित करने के उद्देश्य से हरियाणा खेल उपकरण प्रावधान योजना 2025-26 आरंभ की गई है। यह जानकारी जिला खेल अधिकारी सत्येन्द्र कुमार ने देते हुए बताया कि योजना के तहत वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल, हैंडबॉल, बॉक्सिंग, कुश्ती, जूडो, क्रिकेट, योगा एवं वेटलिफ्टिंग सहित विभिन्न खेलों के लिए निर्धारित मानकों के अनुसार खेल सामग्री ग्राम पंचायतों एवं नगर निकायों को उपलब्ध करवाई जाएगी।

उन्होंने बताया कि संबंधित ग्राम पंचायतें एवं नगर निकाय अपनी आवश्यकता के अनुसार चिन्हित खेलों की सामग्री की मांग निर्धारित प्रोफार्मा में भरकर 31 मार्च 2026 तक जिला खेल कार्यालय, झज्जर में प्रस्तुत करें। खेल सामग्री की मांग से संबंधित प्रोफार्मा किसी भी कार्य दिवस में जिला खेल कार्यालय, झज्जर से प्राप्त किया जा सकता है।

जिला खेल अधिकारी ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत वही ग्राम पंचायतें एवं नगर निकाय पात्र होंगे, जिन्होंने पिछले दो वित्तीय वर्षों में संबंधित खेल सामग्री प्राप्त नहीं की हो।

सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि सरकार द्वारा प्रत्येक खेल के लिए पात्र खेल सामग्री निर्धारित की गई है। इसके तहत वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल एवं हैंडबॉल के लिए पोल स्थापित होने की स्थिति में 6-6 बॉल तथा आवश्यक नेट उपलब्ध करवाए जाएंगे। बॉक्सिंग के लिए 6 पंचिंग बैग एवं 12 जोड़ी दस्ताने, कुश्ती व जूडो के लिए निर्धारित आकार के कवर सहित 18-18 पीस मैट प्रदान किए जाएंगे।

क्रिकेट के लिए एक किट उपलब्ध करवाई जाएगी, जिसमें दो बैट, स्टंप सहित दो विकेट सेट, 6 बॉल, दो जोड़ी बैटिंग पैड व दस्ताने तथा एक जोड़ी विकेटकीपिंग पैड व दस्ताने शामिल होंगे। इसके अलावा योगा के लिए निर्धारित आकार के मैट तथा वेटलिफ्टिंग के लिए बारबेल (20 किलोग्राम) के साथ 2.5, 5, 10, 15 व 20 किलोग्राम की एक-एक जोड़ी प्लेट भी उपलब्ध करवाई जाएगी।

बहादुरगढ़ के औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना प्रशासन का उद्देश्य : एसडीएम

परिवहन विशेष न्यूज

एसडीएम अभिनव सिवाच की अध्यक्षता में हुई औद्योगिक संगठनों व विभागीय अधिकारियों की संयुक्त बैठक

बहादुरगढ़, 9 फरवरी। शहर के औद्योगिक क्षेत्र की मूलभूत सुविधाओं के विस्तार और समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए एसडीएम अभिनव सिवाच की अध्यक्षता में विभागीय अधिकारियों और औद्योगिक संगठनों के पदाधिकारियों की संयुक्त बैठक उपमंडल लघु सचिवालय में हुई। एसडीएम अभिनव सिवाच ने कहा कि बहादुरगढ़ के विकास को तेज गति प्रदान करने के लिए प्रशासन हर स्तर पर प्रयासरत है। बैठक में मौजूदा औद्योगिक क्षेत्रों में ढांचागत सुविधाओं में सुधार, मूलभूत सुविधाओं में विस्तार, बिजली आपूर्ति, कानून व्यवस्था,विभागों द्वारा जारी की जाने वाली एनओसी सहित अन्य मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। उन्होंने पिछली बैठकों में उठाए गए मुद्दों पर हुई प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की ।

बैठक के दौरान उद्यमियों ने प्रॉपर्टी टैक्स, सफाई व्यवस्था और सीवरेज प्रणाली आदि से जुड़े अनेक मुद्दो पर प्रशासन को अवगत कराया। एसडीएम ने की समस्याओं को सुनने के बाद मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस तरह की नियमित बैठकें आयोजित होने से न केवल समस्याओं का जल्द निपटारा होता है, बल्कि शहर के औद्योगिक बुनियादी ढांचे में भी सुधार आता है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित प्रणाली के माध्यम से उद्योगों की समस्याओं, सुझावों एवं आवश्यक अनुमतियों पर शीघ्र कार्रवाई की जाएगी, जिससे निवेशकों का विश्वास और बढ़ेगा तथा क्षेत्र में औद्योगिक विकास को गति मिलेगी।

बैठक में औद्योगिक संगठन बीसीसीआई और कोबी के पदाधिकारी, नगर परिषद, एच.एस.आई.आई.डी.सी , जिला उद्योग केंद्र , लोक निर्माण विभाग सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

12 फरवरी की आम हड़ताल में नहीं शामिल होंगे एन एफ आई टी यू से संबद्ध श्रमिक संगठन : डॉ. दीपक जायसवाल

सुनील बाजपेई

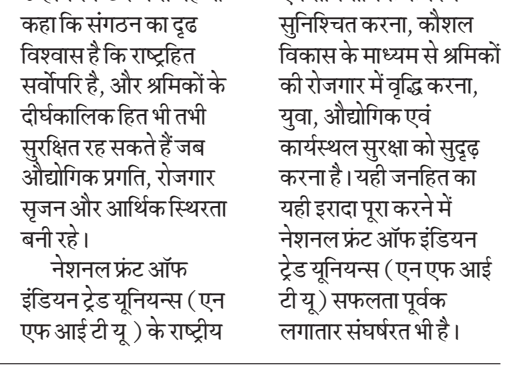

कानपुर। आगामी 12 फरवरी को प्रस्तावित आम हड़तालपूर्ण रूप से राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित है। इसीलिए एन एफ आई टी यू और उससे सम्बद्ध श्रमिक संगठन इसमें कदापि शामिल नहीं होंगे। नेशनल फ्रंट ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स (एन एफ आई टी यू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार जायसवाल ने इस बारे में घोषणा करते हुए कहा कि 12 फरवरी 2026 को कुछ राजनैतिक श्रमिक संगठनों द्वारा प्रस्तावित आम हड़ताल प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित है। उन्होंने बताया कि एन एफ आई टी यू भारत सरकार से मान्यता प्राप्त, ग्लोबल कॉरिलेशन फॉर सोशल जस्टिस का सदस्य तथा एक गैर-राजनीतिक केंद्रीय श्रमिक संगठन है। जो कि संगठन श्रमिकों के वास्तविक हितों, औद्योगिक शांति, सामाजिक सुरक्षा तथा राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानते हुए कार्य करता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार जायसवाल ने बताया कि इसीलिए एन एफ आई टी यू से सम्बद्ध क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय श्रमिक संगठन इस हड़ताल में भाग नहीं ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस संबंधमें देश भर में सभी संबद्ध यूनियनों, औद्योगिक फेडरेशनों तथा राज्य एवं जिला इकाइयों को अपने सदस्यों को नियमित रूप से कार्यस्थलों पर उपस्थित रहते हुए हरताल में भाग न लेने के स्पष्ट निर्देश जारी किए जा चुके हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार जायसवाल ने यह भी कहा कि एन एफ आई टी यू का स्पष्ट मत है कि इस प्रकार की हडतालों से श्रमिकों को कार्यदिवसों की हानि, वेतन पर प्रतिकूल प्रभाव तथा औद्योगिक गतिविधियों में बाधा का सामना करना पड़ता है; साथ ही इससे देश की अर्थव्यवस्था, औद्योगिक उत्पादन, सार्वजनिक सेवाओं और समग्र राष्ट्रीय हितों को भी गंभीर नुकसान पहुँचता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह भी कहा कि संगठन का दृढ विश्वास है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है, और श्रमिकों के दीर्घकालिक हित भी तभी सुरक्षित रह सकते हैं जब औद्योगिक प्रगति, रोजगार सृजन और आर्थिक स्थिरता बनी रहे।

नेशनल फ्रंट ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स (एन एफ आई टी यू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार जायसवाल ने संबंधित श्रमिक संगठनों से हड़ताल में शामिल नहीं होने की अपील करते हुए यह भी कहा कि श्रमिकों की समस्याओं का समाधान हड़ताल जैसे कदमों से नहीं, बल्कि आपसी संवाद, परामर्श, सामाजिक साझेदारी तथा समयबद्ध और परिणामोन्मुख निर्णय प्रक्रिया के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने बताया कि एन एफ आई टी यू का मुख्य एजेंडा युवाओं एवं महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों का सृजन, 'सम्मानजनक कार्य का संवर्धन, सभी श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा का प्रभावी एवं सार्वभौमिक कवरेज सुनिश्चित करना, कौशल विकास के माध्यम से श्रमिकों की रोजगार में वृद्धि करना, युवा, औद्योगिक एवं कार्यस्थल सुरक्षा को सुदृढ़ करना है। यही जनहित का यही इरादा पूरा करने में नेशनल फ्रंट ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स (एन एफ आई टी यू) सफलता पूर्वक लगातार संघर्षरत भी है।

यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा ने एससी/एसटी एक्ट में मुसलमानों को शामिल करने की मांग की

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: आज यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के तत्वावधान में दिल्ली के जंतर-मंतर पर एक विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफ़िज़ गुलाम सरवर ने संबोधित करते हुए कहा कि देश में वास्तविक सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए एससी/एसटी एक्ट के दायरे का विस्तार करना समय की अहम ज़रूरत बन चुका है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान स्थिति में यह कानून केवल कुछ विशेष वर्गों तक सीमित है, जबकि मुसलमान, विशेष रूप से पसमांदा (पिछड़े) वर्ग, भी उसी तरह के अत्याचार, शोषण और हिंसा का सामना कर रहे हैं, लेकिन उन्हें समान कानूनी संरक्षण प्राप्त नहीं है।

हाफ़िज़ गुलाम सरवर ने आगे कहा कि देश में बढ़ती सामाजिक हिंसा (Social Violence) और सांप्रदायिक हिंसा (Communal Violence) इस बात की मांग करती है कि कानून की पुनः समीक्षा न्याय के सिद्धांतों के आधार पर की जाए। यदि किसी कानून का उद्देश्य पीड़ितों को सुरक्षा देना है, तो यह सुरक्षा धर्म या पहचान से ऊपर उठकर हर वंचित वर्ग तक पहुंचनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि सांप्रदायिक राजनीति (Communal Politics) ने समाज में नफ़रत, पूर्वाग्रह और अविश्वास का माहौल पैदा किया है, जिसके कारण सामाजिक सौहार्द प्रभावित हो रहा है और लोकतांत्रिक मूल्य कमजोर पड़ रहे हैं।

राष्ट्रीय प्रवक्ता ने ज़ोर देकर कहा कि यदि वास्तव में हिंसा, नफ़रत और भेदभाव को समाप्त करना उद्देश्य है, तो कानून निर्माण में समानता और न्याय को आधार बनाना होगा। एससी/एसटी एक्ट में मुसलमानों को शामिल करना सामाजिक न्याय की दिशा में एक आवश्यक कदम है।

अंत में उन्होंने बुद्धिजीवी वर्ग, सामाजिक संगठनों और आम जनता से अपील की कि वे इस गंभीर मुद्दे पर गंभीरता से विचार करें और सरकार से मांग करें कि कानून को अधिक व्यापक, न्यायपूर्ण और समावेशी बनाया जाए।

इस विरोध प्रदर्शन की अध्यक्षता डॉ. अब्दुस्सलाम ने की। इस अवसर पर अब्दुल हकीम हवारी, रईस सैफ़ी, गफ्फार सलमानी,दिलशाद अख्तर सलमानी, शाहरुख़ ख़ान, मोहम्मद आज़म आदि ने भी अपने विचार रखे और प्रधानमंत्री से मुसलमानों को एससी/एसटी एक्ट में शामिल करने की मांग की।

रिश्वतखोरी-शर्मसार करते रिचार्ज...!

अंतिम सांस गिन रहीं हैं इंसानियत,
रिश्वतखोरों की पौ बारह वहशियत।
मौत मुनाफे की दुकानों पे नाच रहीं,
दुनिया भयानक उत्सव देखती रहीं।

यह बेंगलुरु की हृदयविदारक घटना,
इससे किसी का ध्यान नहीं हैं हटना।
समाज की आत्मा चस्पा स्याह धब्बा,
बेटी के शव पे हुए हैं सौदे हाय रब्बा।

एम्बुलेंस ड्राइवर ने मांगे पांच हजार,
पोस्टमार्टम के नाम लिए दस हजार।
रिपोर्ट के लिए पुलिस ने पांच हजार,
क्लर्क ने 'मृत्यु प्रमाण-पत्र' दो हजार।

निर्लज्ज सौदेबाजी की फुसफुसाहटें,
वहाँ गड्ढियों में नापी जा रही आहटे।
क्या? लाश पर भी हैं डिलीवरी चार्ज,
इंसानियत को शर्मसार करते रिचार्ज।
(संदर्भ-पिता की गोद में 34 वर्षीय बेटी की लाश-संवेदनहीन सिस्टम।)

संजय एम तराणेकर

डॉ. दर्शनी प्रिया सिंह की पुस्तक "प्रधानमंत्री मोदी के अनमोल रत्न" का भव्य लोकार्पण

राज्यसभा उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने किया विमोचन

डॉ. शंभु पंवार, नई दिल्ली, 9 फरवरी। राजधानी स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब के सभागार में प्रख्यात लेखिका डॉ. दर्शनी प्रिया सिंह की पुस्तक "प्रधानमंत्री मोदी के अनमोल रत्न" का भव्य एवं गरिमामय लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। पुस्तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पद्मश्री सम्मान से अलंकृत देश की 35 विशिष्ट विभूतियों के जीवन, कृतित्व और सामाजिक योगदान पर आधारित है।

लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश नारायण सिंह थे एवं अध्यक्षता सांसद डॉ. धर्मशीला गुप्ता ने की ।जबकि पूर्व केंद्रीय मंत्री शहनवाज हुसैन अति विशिष्ट अतिथि एवं पद्मश्री से सम्मानित सुप्रसिद्ध आर्थोपेडिक डॉ.भूपेंद्र कुमार सिंह 'संजय' तथा उर्मिला श्रीवास्तव विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मेरा गांव मेरा देश के संस्थापक एवं लेखिका के पति संजय सिंह ने अतिथियों को शॉल भेंट कर स्वागत किया ।स्वागत उद्बोधन शायर शिवकुमार बिलगरमी ने प्रस्तुत किया, उन्होंने पुस्तक की विषयवस्तु एवं सामाजिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला ।लोकार्पण के पश्चात उप सभापति हरिवंश नारायण सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि समाज में वही लोग स्थायी सम्मान प्राप्त करते हैं, जो निस्वार्थ भाव से मन, वचन और कर्म द्वारा समाज सेवा में निरंतर संलग्न रहते हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. दर्शनी प्रिया सिंह ने इस पुस्तक के माध्यम से पद्मश्री से सम्मानित विभूतियों के प्रेरक जीवन प्रसंगों को जनसामान्य तक पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया है। यह पुस्तक विशेष रूप से युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी।

लेखिका डॉ. दर्शनी प्रिया सिंह ने कहा कि पुस्तक लेखन के दौरान उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर पद्मश्री सम्मानित व्यक्तित्वों से प्रत्यक्ष संवाद किया तथा उनके कार्यों और जीवन शैली का अध्ययन किया,जिससे पुस्तक को तथ्यपरक एवं प्रभावी स्वरूप मिला ।समारोह में गणमान्य अतिथियों ने पुस्तक को समाजोपयोगी एवं प्रेरणादायक बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध कवि दिनेश शर्मा 'दिनेश' ने किया। इस अवसर पर आकाशवाणी दिल्ली के सहायक निदेशक एवं प्रसिद्ध गजलकार रामावतार बैरवा, लेखिका के पिता, बिहार सरकार के पूर्व अधिकारी सुबोध कुमार सिंह तथा चाचा उज्जवल सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में प्रभात प्रकाशन की ओर से प्रभात कुमार एवं पीयूष कुमार ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

एसबीआई और टाटा स्टील रिकॉर्ड स्तर पर , सेंसेक्स-निफ्टी में मजबूती बरकरार

संगिनी घोष,

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते की उम्मीद और मजबूत तिमाही नतीजों से बाजार में तेजी

आज भारतीय शेयर बाजारों में तेजी का रुख बना रहा। सेंसेक्स और निफ्टी 50 ने बढ़त कायम रखी, जहां भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर सकारात्मक संकेतों और तीसरी तिमाही के मजबूत नतीजों ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया। इसी कारण स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) और टाटा स्टील के शेयरों ने रिकॉर्ड उच्च स्तर छू लिया।

प्रमुख सूचकांकों में स्थिर मजबूती

दिनभर के कारोबार के दौरान सेंसेक्स मजबूती के साथ कारोबार करता दिखा। बैंकिंग, मेटल और चुनिंदा वित्तीय शेयरों में खरीदारी का समर्थन बाजार को मिला। निफ्टी 50 भी सकारात्मक दायरे में बना रहा, जिससे यह साफ हुआ कि निवेशक फिलहाल सतर्क लेकिन आशावादी रुख अपना रहे हैं।

एसबीआई और टाटा स्टील की अगुवाई

तीसरी तिमाही के मजबूत प्रदर्शन के बाद एसबीआई के शेयरों में जबरदस्त तेजी देखने को मिली। बेहतर लोन ग्रोथ और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया, जिससे शेयर नई ऊंचाई पर पहुंच गया।

वहीं, टाटा स्टील ने भी रिकॉर्ड स्तर हासिल किया। कंपनी के बेहतर परिचालन आंकड़ों, स्थिर मांग संकेतों और लागत दबाव में कमी की उम्मीदों ने शेयर को मजबूती दी।

बाजार को सहारा देने वाले प्रमुख कारण

1. भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर सकारात्मक माहौल
2. मजबूत Q3 नतीजों से कॉर्पोरेट आय में भरोसा
3. संस्थागत निवेशकों की निरंतर भागीदारी
4. वैश्विक बाजारों से मिले सहयोगी संकेत

सेक्टर आधारित प्रदर्शन

बैंकिंग और मेटल सेक्टर बाजार में सबसे आगे रहे। वित्तीय शेयरों में भी अच्छी खरीदारी देखने को मिली। वहीं, डिफेंसिव सेक्टर में सीमित हलचल रही, जो यह दर्शाता है कि निवेशक संतुलित रणनीति अपना रहे हैं।

आगे की राह

बाजार की मौजूदा तेजी यह संकेत देती है कि निवेशकों को भारत की आर्थिक स्थिति और कंपनियों की आय पर भरोसा है। यदि व्यापार समझौते से जुड़े संकेत सकारात्मक बने रहते हैं और नतीजे मजबूत रहते हैं, तो बाजार को आगे भी समर्थन मिल सकता है। हालांकि, वैश्विक घटनाक्रमों और नीतिगत फैसलों पर नजर बनाए रखना निवेशकों के लिए जरूरी रहेगा।

एससी/एसटी महिलाओं, छात्रों, मजदूरों, पत्रकारों व सामाजिक कार्यकर्ताओं पर सरकारी उत्पीड़न के खिलाफ एक दिवसीय परिचर्चा आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार अगर आवाज़ दबाएगी तो हम संविधान लेकर सड़कों पर उतरेंगे : रजत कल्सन

हिसार/हरियाणा

हिसार के गुरु रविदास हिसार, गुरु रविदास छात्रावास में एससी/एसटी महिलाओं, छात्रों, मजदूरों व सामाजिक कार्यकर्ताओं के सरकारी उत्पीड़न के मामलों में एक दिवसीय परिचर्चा आयोजित की गई। इस समारोह का आयोजन टीम रजत कल्सन द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रथम सत्र में पत्रकारों के सरकारी उत्पीड़न पर बातचीत की गई जिसमें बात रखते हुए स्वतंत्र पत्रकार उदय चे ने बताया कि 14 जुलाई 2025 को उन्होंने रजत कल्सन द्वारा किए गए प्रदर्शन की कवरेज की थी जिनके कारण पुलिस द्वारा उन्हें टारगेट किया गया, उन्हें नोटिस भेजा गया तथा एफआईआर दर्ज कर जेल भेजने की धमकियां दी गई।

उदय चे ने बताया कि वे जब तक किसान आंदोलन की सकारात्मक रिपोर्टिंग करते रहे तब तक वो किसान, जमीदारों तथा चौधरियों की आंखों के तारे थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने दलित समाज के दर्द को अपने कैमरे के माध्यम से बयां करना शुरू किया तो वे सामंतवादी विचारधारा के लोगों की आंखों में खटकने लगे तथा उन्हें सरकार द्वारा ही नहीं एक विशेष जमात द्वारा भी गालियां व धमकियां दी जाने लगी, इसी कड़ी में हिसार के दबंग पत्रकार संजय चौहान ने बताया कि वह पुलिस की गैरकानूनी कार्रवाईयों को कैमरे के माध्यम से जनता को दिखाने का काम कर रहे थे, 30 जुलाई 2025 को पुलिस द्वारा उन्हें गिरफ्तार किया गया तथा जाति विशेष के पुलिस अधिकारियों द्वारा उन्हें थर्ड डिग्री टॉर्चर दिया गया तथा जाति के आधार पर थानों में उनका अपमान किया गया तथा उन पर आधा दर्जन से अधिक केस दर्ज कर जेल भेज दिया गया जहां उन्हें एक महीने जेल की सलाखों के पीछे बिताना पड़ा लेकिन वह समाज तथा पत्रकारिता के धर्म के प्रति प्रतिबद्ध हैं तथा अपना काम बिना डर के करते रहेंगे। इसी तरह नरवाना से आए हुए पत्रकार अंकुर ग्रोवर ने बताया कि जब उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल पर नरवाना में सरकार द्वारा विकास कार्यों के दावों की पोल खोलनी शुरू की स्थानीय मंत्री नेताओं द्वारा अपने जान से मारने की धमकी दी जाने लगी तथा उनके विरुद्ध एफआईआर तक दर्ज कर दी गई तथा उन्हें जेल भेजने तक की साजिश रची गई इसी तरह के पत्रकार संजय बौद्ध ने कहा कि जब से उन्होंने दलित समाज तथा इंटरव्यू करने शुरू किए हैं उन्हें विदेशियों से धमकी आने शुरू हो गई है तथा पुलिस इस बात पर कोई भी गौर नहीं कर रही है।

उससे अगले सत्र में महिला विरुद्ध अपराध पर बात की गई जिसमें लोहारू से आए हुए एक पीड़ित पिता ने बताया कि गरीबी की वजह से वह अपनी बच्ची की स्कूल की फीस नहीं भर पाए थे जिसके चलते उनकी बेटी को प्रताड़ित किया गया तथा कॉलेज के मालिक जो एक मौजूदा विधायक है उनके भतीजे द्वारा उनकी पुत्री का यौन शोषण किया गया तथा इसी प्रताड़ना से तंग आकर उनकी बेटी ने आत्महत्या कर ली तथा पुलिस अब भी आरोपियों को बचाने का प्रयास कर रही है।

छात्रों के अधिकारों के बारे में छात्र नेता डॉक्टर अमरजीत गुरतरो व संजू बाबा ने भी अपनी बातें रखी तथा यूजीसी के बिल पर खुलकर बात की।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता रिखीराम रहे तथा इस कार्यक्रम को दलित विचारक जगबीर कटारिया, करनैल सिंह ओढां, राष्ट्रीय मिशनरी गायक मंजीत मेहरा, जरमिला देवी , प्रदीप भानखुड ने भी संबोधित किया।

इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता रिखीराम द्वारा सामाजिक कार्यों के लिए डॉक्टर पूजा अल्हान, अधिवक्ता राजेंद्र पाटील, जगबीर कटारिया, प्रदीप भानखुड, सिंगर मंजीत मेहरा, विक्रम नरड़, डॉ विक्रम बिबियान, संजू बाबा, प्रताप खोबडा, भूषण कुमार नूनिया, एडवोकेट राकेश भुक्कल, कुलविंदर बोस्ती, पत्रकार संजय बौद्ध, अधिवक्ता दीपक सैनी, नरेश दुलट, सामाजिक कार्यकर्ता अमित मुवाल, जगदीश फरटिया, आसीन उझाना, शकुंतला बौद्ध, सुशील महिपाल, संजय ढुल, बजरंग खिच्चड, रमन भुना, अधिवक्ता जिले सिंह वर्मा, सोहनलाल खेदड़, एडवोकेट नरेश गुणपाल, धर्मेंद्र रंगा, पत्रकार उदय चे, शकुंतला बौद्ध, सुरेंद्र पवार, मनीष नानकवाल को सर्टिफिकेट का ऑनर ऑफ़ ऑनर देकर व शाल ओढाकर मान-सम्मान दिया ।

इस अवसर पर जो पीड़ित आए हुए थे उनसे उनके मामलों की जानकारी ली गई तथा उन्हें सुप्रीम कोर्ट से लेकर मैजिस्ट्रेट की अदालत तक कानूनी मदद देने का आश्वासन दिया गया।

इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के आयोजक अधिवक्ता रजत कल्सन ने कहा की जब-जब सरकार छात्रों, महिलाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, वकीलों, पत्रकारों व मजदूरों की आवाज को दबाने का प्रयास करेगी तब तक वे लोग संविधान की किताब लेकर समाज के लोगों को उनके अधिकारों की याद दिलाने के लिए सड़कों पर भी निकलेंगे तथा इस तरह के आयोजन करते रहेंगे ।

उन्होंने कहा इस कार्यक्रम में आई भीड़ में बता दिया है कि लोग सरकार की तानाशाही व दमनकारी नीति से तंग आ चुके हैं तथा बदलाव चाहते हैं

उन्होंने कहा कि वह सरकार व पुलिस द्वारा सामाजिक कार्यकर्ताओं पत्रकारों, छात्रों, मजदूर एवं महिलाओं पर किए जा रहे उत्पीड़न की कार्रवाई की एक-एक पाई का हिसाब अदालत में लेंगे।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता रिखीराम ने कार्यक्रम में आए हुए लोगों का धन्यवाद किया तथा इस तरह के कार्यक्रम आगे भी होते रहे आयोजित कमेटी को सुझाव दिया।

दिल्ली पुलिस अकादमी में विभिन्न कैडरों के नवप्रशिक्षित कर्मियों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्लीः दिल्ली पुलिस अकादमी, झरोदा कलां में दिनांक 9 फ़रवरी 2026 को दिल्ली पुलिस के विभिन्न कैडरों से संबंधित नवप्रशिक्षित पुलिस कर्मियों एवं नागरिक कर्मचारियों का शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री मोहम्मद अली, आईपीएस, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त एवं उप निदेशक, दिल्ली पुलिस अकादमी रहे, जिन्होंने परेड की सलामी ली। शपथ का संचालन श्री राजेश दहिया, एसीपी/मुख्यालय, दिल्ली पुलिस अकादमी द्वारा कराया गया। कार्यक्रम के दौरान कुल 12 प्रशिक्षुओं ने सफलतापूर्वक अपना प्रशिक्षण पूर्ण किया, जिनमें 07 हेड कांस्टेबल (मिनिसट्रियल) शामिल थे, जिनमें 5 महिला कर्मी भी थीं। इसके अतिरिक्त 01 रिक्रूट कांस्टेबल (ड्राइवर), 02 रिक्रूट कांस्टेबल (हेल्पर) तथा 02 एमटीएस (सिविलियन) कर्मी, जिनमें 1 महिला शामिल रही, ने भी प्रशिक्षण पूरा कर शपथ ग्रहण की।

समारोह के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रशिक्षुओं को सम्मानित भी किया गया। हेड कांस्टेबल अरुण लोहचाब को 'ऑल राउंड बेस्ट ट्रॉफी' से सम्मानित किया गया, जबकि महिला हेड कांस्टेबल शिवानी को 'बेस्ट इन आउटडोर ट्रॉफी' प्रदान की गई। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि श्री मोहम्मद अली ने सभी प्रशिक्षुओं को समाज सेवा में समर्पण और निष्ठा के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस का प्रत्येक सदस्य जनता के लिए विश्वास, सुरक्षा और न्याय का प्रतीक है तथा सभी कर्मियों का कर्तव्य है कि वे अपने आचरण और कार्यशैली से इस विश्वास को और मजबूत करें। उन्होंने यह भी कहा कि अनुशासन, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा ही एक सफल पुलिस अधिकारी की पहचान होती है और इसी भावना के साथ सभी नवप्रशिक्षित कर्मी अपने दायित्वों का निर्वहन करें, ताकि समाज में शांति, कानून व्यवस्था और सुरक्षा का वातावरण सुदृढ़ बना रहे।

बप्पा के दरबार में सुंदरकांड का पाठ सम्पन्न हुआ

खजराना मंदिर इन्दौर में बप्पा के दरबार में संगीतमय सुंदरकांड का पाठ हुआ। परम पूज्य गुरुदेव आश्विन कुमार पाठक के मुखारविंद खजराना गणेश मंदिर प्रवचन हाल में संपन्न हुआ। प्रसिद्ध गुरु जी पाठक जी ने अभी तक 9 हजार पांच सो तीस पाठ कर पूरे देश में नि शुल्क कर चुके हैं। आज इन्दौर में खजराना गणेश जी के दर्शन भी उन्होंने किये। इस में मुख्य रूप से पवार लिफ्टिंग एसोसिएशन, मध्यप्रदेश प्रदेश जिम ऑनर एसोसिएशन, श्री राम स्पोर्ट्स ग्रुप, खजराना लड्डू व्यापारी एसोसिएशन व शालीग्राम व्यामशाला के सदस्यगण व मातृशक्ति उपस्थित रही । खेड़ापति हनुमान जी महाराज व खजराना गणेश जी के आशीष से कार्यक्रम संपन्न हुआ। यहां उपरोक्त जानकारी समाजिक कार्यकर्ता रामेश्वर चौहान व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने संयुक्त रूप से प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

प्रेषक - समाजिक कार्यकर्ता रामेश्वर चौहान खजराना मंदिर स्वतंत्र पत्रकार व लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

विकसित भारत 2047 और सुशासन का संकट: -निर्धारित ड्रेसकोड पहचान पत्र नदारद- अनुशासन, जवादेही और प्रशासनिक संस्कृति का वैश्विक परिप्रेक्ष्य -एक समग्र विश्लेषण

देश क़ी राज्य सरकारों को पंजाब दिल्ली और क़ा सरकार तुहाडे द्वार व डोरस्टेप डिलीवरी ऑफ पब्लिक सर्विसेज यह मॉडल अपनाने की खास जरूरत है

सरकारी दफ्तरों के चक्कर, अनसुनी शिकायतें,बिना पहचान आईकार्ड के कर्मचारी, ड्रेस कोड का उल्लंघन, फाइलों का महीनों लंबित रहना और जवाबदेही का अभाव

दुर्भाग्यपूर्ण -**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत आज एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है।पीएम से लेकर केंद्र और राज्य स्तर केप्रत्येक मंत्री के भाषणों में विकसित भारत एक केंद्रीय संकल्प के रूप में उभरकर सामने आता है। इस संकल्प के चार प्रमुख स्तंभ, तकनीकी नवाचार, आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और सुशासन भारत के भविष्य की दिशा तय करने वाले तत्व माने जा रहे हैं।इनमें से सुशासन वह आधार है, जिसपर बाकी सभी स्तंभ टिके होते हैं।किंतु जमीनी हकीकत यह है कि सरकारी और न्यायालयीन कार्यालयों में व्याप्त अनुशासनहीनता, कमजोर दंड व्यवस्था और कार्य-संस्कृति की गिरावट इस सपने को खोखला करने का कार्य कर रही है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि भारत के आम नागरिक के लिए सुशासन कोई सैद्धांतिक शब्द नहीं, बल्कि रोज़मर्रा का अनुभव है। सरकारी दफ्तरों के चक्कर, अनसुनी शिकायतें,बिना पहचान आईकार्ड के कर्मचारी, ड्रेस कोड का उल्लंघन, फाइलों का महीनों लंबित रहना और जवाबदेही का अभाव। यह स्थिति केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक विश्वास के क्षरण का संकेत है।दूसरी तरफ दिल्ली और पंजाब की सरकार प्रमुखता से सरकार तुहाडे द्वार व सरकार आपके द्वार के माध्यम से घर -घर सेवाएं प्रदान कर रही है।इस पहल के तहत, मुख्यमंत्री के नेतृत्व में पंजाब में 10 दिसंबर 2023 से 43 सरकारी सेवाएं नागरिकों के घर तक पहुंचाई जा रही हैं, जिसमें दफ्तरों के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है। इस तर्ज पर पूरे देश क़ी राज्य सरकारों को यह मॉडल अपनाने की खास जरूरत है।

साथियों बात अगर हम सुशासन की अवधारणाः अंतरराष्ट्रीय मानकों में भारत कहां खड़ा है इसको समझने की करें तो विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र और ओसीईडी जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के अनुसार सुशासन के प्रमुख तत्व हैं,पारदर्शिता,जवाबदेही,कानून का शासन,दक्षता और नागरिक- केनद्रित सेवाएं। विकसित देशों में सरकारी कर्मचारी केवल सेवा प्रदाता नहीं,बल्कि सार्वजनिक विश्वास के संरक्षक माने जाते हैं।वहां ड्रेस कोड,पहचान पत्र, समयबद्ध सेवा और व्यवहारिक शिष्टाचार अनिवार्य प्रशासनिक अनुशासन का हिस्सा हैं।इसके विपरीत भारत में अनेक सरकारी और न्यायालयीन कार्यालयों में कर्मचारी न तो निर्धारित ड्रेस कोड का पालन करते हैं, न ही पहचान पत्र प्रदर्शित करते हैं।यह केवल एक औपचारिक कमी नहीं,बल्कि सत्ता और नागरिक के बीच असमानता की मानसिकता को दर्शाता है, जहां कर्मचारी स्वयं को जवाबदेह नहीं मानता।

साथियों बात अगर हम अनुशासन हीनताः विकसित भारत की सबसे बड़ी आंतरिक बाधा इसको समझने की करें तो,अनुशासन किसी भी संगठन की रीढ़ होता है,विशेषकर शासन व्यवस्था में। किंतु भारत के शासकीय कार्यालयों में अनुशासन की भारी कमी एक सामान्य दृश्य बन चुकी है। कार्यालय समय का पालन न करना,नागरिकों से असम्मानजनक व्यवहार, नियमों की खुली अवहेलना और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा आंख मूंद लेना ये सभी प्रशासनिक विफलता के स्पष्ट संकेत हैं।न्यायालयीन परिसरों में भी स्थिति भिन्न नहीं है। न्याय के मंदिरों में यदि अनुशासन और पारदर्शिता ही कमजोर हो, तो आम नागरिक का न्याय प्रणाली पर विश्वासडगमगाना स्वाभाविक है। विकसित राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है।

साथियों बात अगर हम कमजोर दंड व्यवस्था और दण्डहीनता की संस्कृति इसको समझने की करें तो प्रशासनिक नियमों का उल्लंघन तभी रुकता है जब उसके परिणाम स्पष्ट और कठोर हों। भारत में समस्या यह नहीं है कि नियम नहीं हैं, बल्कि यह है कि नियमों के उल्लंघन पर दंड की प्रक्रिया कमजोर, धीमी और अक्सर राजनीतिक या प्रशासनिक दबाव से प्रभावित रहती है। जब कर्मचारी जानते हैं कि ड्रेस कोड न मानने, पहचान पत्र न लगाने या नागरिकों को परेशान करने पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होगी,तो अनुशासन स्वतः समाप्त हो जाता है। दण्डहीनता की यह संस्कृति सुशासन के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

साथियों बात अगर हम फाइल संस्कृति,देरी और प्रशासनिक उदासीनता इसको समझने की करें तो फाइल लंबित है भारत की शासन व्यवस्था का सबसे कुख्यात वाक्य बन चुका है। समय पर काम न होना, अनावश्यक प्रक्रियाएं और कर्मचारियों की उदासीनता न केवल आर्थिक विकास को धीमा करती हैं,बल्कि नागरिकों को मानसिक,सामाजिक और आर्थिक पीड़ा भी देती हैं।अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताता है कि विकसित देशों में प्रशासनिक दक्षता को मापा जाता है,प्रत्येक सेवा की समय सीमा तय होती है और विलंब के लिए जिम्मेदारी निर्धारित की जाती है। भारत में अभी भी यह संस्कृति व्यापक रूप से विकसित नहीं हो पाई है।

साथियों बात अगर हम नौकरशाही का दबदबा और नागरिक-केनद्रित शासन का अभाव इसको समझने की करें तो भारत की शासन व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से औपनिवेशिक नौकरशाही से प्रभावित रही है, जहां प्रशासन शासक-केनद्रित था, नागरिक- केनद्रित नहीं। आज़ादी के दशकों बाद भी यह मानसिकता पूरी तरह बदली नहीं है। कई सरकारी कार्यालयों में नागरिक को याचक की तरह देखा जाता है, जबकि वास्तव में वह करदाता और अधिकारधारी है।विकसित भारत की परिकल्पना तभी साकार होगी जब प्रशासन स्वयं को सेवा प्रदाता और नागरिक को ग्राहक नहीं, बल्कि साझेदार माने।

साथियों बात अगर हम राजनीतिक हस्तक्षेप और जवाबदेही का संकट इसको समझने की करें तो,सुशासन की राह में राजनीतिक हस्तक्षेप एक और बड़ी बाधा है। जब अनुशासनात्मक कार्रवाई राजनीतिक दबाव में कमजोर पड़ती है, तो संदेश स्पष्ट होता है नियम सभी पर समान रूप से लागू नहीं होते। यह स्थिति प्रशासनिक मनोबल को भी कमजोर करती है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो मजबूत लोकतंत्र वही हैं।जहां प्रशासनिक निर्णय कानून और नियमों के आधार पर होते हैं, न कि राजनीतिक संरक्षण पर।

साथियों बात अगर हम विकसित भारत के लिए आवश्यक संरचनात्मक सुधार को समझने की करें तो विकसित भारत 2047 केवल आर्थिक आंकड़ों का लक्ष्य नहीं, बल्कि प्रशासनिक संस्कृति के परिवर्तन का मिशन है। इसके लिए सबसे पहले कार्यकुशलता में सुधार आवश्यक है। सरकारी और न्यायालयीन प्रक्रियाओं का व्यापक डिजिटलीकरण, समयबद्ध सेवाएं और प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन अनिवार्य होना चाहिए। डिजिटल गवर्नेंस केवल तकनीक नहीं, बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही का माध्यम है।जब हर प्रक्रिया ट्रैक होती है, तो अनुशासन स्वतः मजबूत होता है।

साथियों बात अगर हम अनुशासन लागू करने के लिए कठोर और निष्पक्ष कार्रवाई को समझने की करें तो अनुशासन बनाए रखने के लिए नियमों का सख्ती से पालन और उल्लंघन पर त्वरित कार्रवाई आवश्यक है। ड्रेस कोड, पहचान पत्र और नागरिक व्यवहार जैसे बुनियादी नियमों की अनदेखी पर केवल कर्मचारी ही नहीं, बल्कि संबंधित अधीक्षक और वरिष्ठ अधिकारी की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए।नियमों का पालन सुझाव नहीं, बल्कि अनिवार्यता होना चाहिए।यही विकसित शासन व्यवस्था की पहचान है।प्रशिक्षण, नैतिकता और कार्य-संस्कृतिप्रशासनिक सुधार केवल दंड से नहीं, बल्कि प्रशिक्षण से भी आता है। कर्मचारियों के लिए नैतिक, व्यवहारिक और कार्य-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम अनिवार्य किए जाने चाहिए। उन्हें यह समझाना आवश्यक है कि वे सत्ता के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि सार्वजनिक सेवा के वाहक हैं।विकसित देशों में सरकारी सेवा को पब्लिक ट्रस्ट माना जाता है। भारत को भी इसी दिशा में अपनी प्रशासनिक संस्कृति को पुनर्गठित करना होगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि विकसित भारत का रास्ता अनुशासन से होकर जाता है,विकसित भारत 2047 का सपना तभी साकार होगा जब सुशासन केवल भाषणों का विषय न रहकर, कार्यालयों की कार्य-संस्कृति में दिखाई दे। ड्रेस कोड से लेकर जवाबदेही तक, पहचान पत्र से लेकर समयबद्ध सेवा तक ये सभी छोटे दिखने वाले तत्व वास्तव में राष्ट्र निर्माण की नींव हैं।यदि प्रशासनिक अनुशासन, दंड व्यवस्था और

ध्यान आपके मस्तिष्क की गतिविधि को नया रूप दे सकता है

● विजय गर्ग

इतालवी राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद की न्यूरोफिजियोलॉजिस्ट एनालिसा पास्कारेला के नेतृत्व में हाल ही में किए गए एक अध्ययन में उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले मस्तिष्क स्कैन और मशीन लर्निंग का उपयोग करके यह पता लगाया गया कि ध्यान किस प्रकार मस्तिष्क की गतिशीलता को बदलता है।

ध्यान तनाव को कम करने और शांति बढ़ाने के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है, लेकिन नए तंत्रिका विज्ञान अनुसंधान से पता चलता है कि यह मस्तिष्क की गतिविधियों को भी सक्रिय रूप से बदल सकता है। इससे विद्युत और नेटवर्क दोनों स्तरों पर मस्तिष्क का कार्यप्रणाली में संभावित परिवर्तन आ सकता है।

अध्ययन में क्या पाया गया

इतालवी राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद की न्यूरोफिजियोलॉजिस्ट एनालिसा पास्कारेला के नेतृत्व में हाल ही में किए गए एक अध्ययन में उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले मस्तिष्क स्कैन और मशीन लर्निंग का उपयोग करके यह पता लगाया गया कि ध्यान किस प्रकार मस्तिष्क की गतिशीलता को बदलता है।

शोधकर्ताओं ने थाई वन परंपरा से 12 अनुभवी बौद्ध भिक्षुओं को भर्ती किया, जिनमें से प्रत्येक ने 15,000 घंटे से अधिक ध्यान अभ्यास किया और चुंबकीय मस्तिष्क विज्ञान (एमईजी) का उपयोग करके उनके मस्तिष्क की गतिविधि को मापा

विश्राम में

समथा ध्यान (सांस लेने जैसी किसी विशिष्ट अनुभूति पर ध्यान केंद्रित करना) का अभ्यास करना

विपश्यना ध्यान (विचारों और संवेदनाओं की खुली जागरूकता) का अभ्यास करना

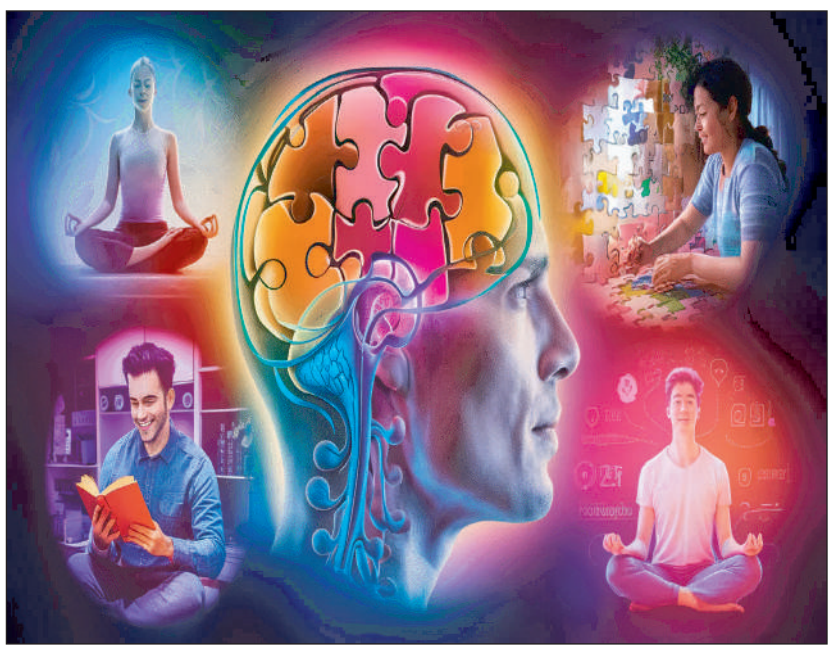

मस्तिष्क की गंभीरता तक पहुंचना

परिणाम आश्चर्यजनक थे। ध्यान से तंत्रिका गतिविधि को उस अवस्था की ओर ले जाया जाता है जिसे शोधकर्ता ₹मस्तिष्क आलोचनात्मकता₹ कहते हैं यह तंत्रिका क्रम और अराजकता के बीच एक नाजुक संतुलन है जो मस्तिष्क को अनुकूलित करने में मदद कर सकता है:

सूचना को संसाधित करता है

नये कार्यों के अनुकूल

यादें संग्रहीत करता है और पुनः प्राप्त करता है

इस संतुलित अवस्था में, मस्तिष्क नेटवर्क को अधिक कुशल और लचीला माना जाता है - यह कई परिस्थितियों में इंजन को सुचारू रूप से चलाने के लिए ट्यून करने जैसा है। अलग ध्यान, अलग प्रभाव

दो प्रकार के ध्यान से अलग-अलग तंत्रिका पैटर्न उत्पन्न हुए

समथा ने मस्तिष्क की स्थिर, केंद्रित अवस्था को बढ़ावा दिया, जो एकाग्रता के लिए आदर्श है।

विपश्यना ने मस्तिष्क को महत्वपूर्ण अवस्था के करीब लाया, जिससे समग्र लचीलापन और जागरूकता बढ़ गई।

दिलचस्प बात यह है कि इस अध्ययन में गामा दोलन - एक प्रकार की उच्च आवृत्ति वाली मस्तिष्क गतिविधि, जो अक्सर बाहरी उत्तेजनाओं के प्रसंस्करण से जुड़ी होती है - पाया गया, जिससे पता चलता है कि ध्यान बाहरी दुनिया से अंदर की ओर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

अनुभव मस्तिष्क को कैसे बदलता है

अनुभवी ध्यानकर्ताओं ने ध्यान और विश्राम के बीच मस्तिष्क की गतिविधि में कम अंतर दिखाया, जिससे पता चलता है कि अभ्यास के साथ, ध्यान अवस्था और विश्राम मस्तिष्क गतिशीलता एक दूसरे से मिलती-जुलती होने लगती हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि नियमित ध्यान मस्तिष्क की आधारभूत कार्यप्रणाली को पुनः सक्रिय कर देता है, न कि केवल ध्यान के दौरान क्षणभंगुर मस्तिष्क अवस्थाओं को।

ध्यान और मस्तिष्क के व्यापक निहितार्थ

यह अध्ययन मस्तिष्क की गतिविधि और संरचना पर ध्यान के प्रभाव को दर्शाने वाले व्यापक शोध में फिट बैठता है: तंत्रिका संरचना और कार्य ध्यान, स्मृति, ध्यान और भावनात्मक विनियमन से जुड़े क्षेत्रों में ग्रे मैटर की मात्रा और कॉर्टिकल मोटाई में वृद्धि के साथ जुड़ा हुआ है।

कुछ गहन ईईजी अध्ययनों में एमिग्डाला और हिप्पोकैम्पस गतिविधि में परिवर्तन पाया गया है, जिससे पता चलता है कि ध्यान भावनात्मक प्रसंस्करण और स्मृति नेटवर्क को प्रभावित कर सकता है।

कनेक्टिविटी और न्यूरोप्लास्टिसिटी

नियमित अभ्यास से मस्तिष्क के प्रमुख क्षेत्रों के बीच कार्यात्मक संबंध मजबूत होते हैं तथा समय के साथ तनाव से संबंधित मस्तिष्क गतिविधि कम हो सकती है।

यह कोई जादुई इलाज नहीं है

हालांकि नया अध्ययन इस बात का ठोस सबूत देता है कि ध्यान मस्तिष्क की गतिविधि को पुनः आकार देता है, लेकिन शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि ध्यान से जुड़े मस्तिष्क परिवर्तनों को अभी भी पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है, तथा ध्यान हर किसी के लिए मानसिक कल्याण का एक सरल या गारंटीकृत मार्ग नहीं है।

कुछ लोग गहन ध्यान अभ्यास के दौरान चिंता या भावनात्मक असुविधा जैसे नकारात्मक अनुभवों की रिपोर्ट करते हैं, जिससे संतुलित वैज्ञानिक जांच की आवश्यकता पर प्रकाश पड़ता है।

सारांश में

ध्यान न केवल मन को आराम देता है, बल्कि यह मस्तिष्क की गतिशीलता को भी नया रूप दे सकता है, तंत्रिका नेटवर्क को अधिक कुशलता से संचालित करने में मदद कर सकता है और संभवतः फोकस, जागरूकता और भावनात्मक संतुलन को बढ़ा सकता है। जैसे-जैसे तंत्रिका विज्ञान के उपकरण अधिक उन्नत होते जा रहे हैं, ध्यान के मानव मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों की हमारी समझ भी बढ़ती जा रही है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद
एमएचआर मलौट पंजाब

शरीर , स्वयं को स्वस्थ करते हैं

डॉ. विजय गर्ग

"शरीर, अपने आप को ठीक करता₹ यह सिर्फ एक काव्यात्मक वाक्यांश नहीं है; यह जीव विज्ञान, चिकित्सा और प्राचीन ज्ञान में निहित एक गहरा सत्य है। मानव शरीर कोई निष्क्रिय मशीन नहीं है जो बाहर से मरम्मत की प्रतीक्षा कर रही हो। यह एक जीवित, बुद्धिमान प्रणाली है जिसमें सही परिस्थितियां दिए जाने पर स्वयं को सुरक्षित करने, मरम्मत करने और पुनर्स्थापित करने की असाधारण क्षमता है।

जब हम पैदा होते हैं, तब से शरीर आत्म-चिकित्सा का यह मौन कार्य शुरू कर देता है। त्वचा पर काटा अपने आप बंद हो जाता है, टूटी हुई हड्डियां एक साथ जुड़ जाती हैं, संक्रमण से हमारी सचेत कोशिश के बिना प्रतिरक्षा कोशिकाएं लड़ती हैं। यहां तक कि सूक्ष्म स्तर पर भी क्षतिग्रस्त डीएनए की मरम्मत की जाती है, घिसी-पिटी कोशिकाओं को प्रतिस्थापित किया जाता है, तथा संतुलन लगातार बहाल किया जाता है। यह अंतर्निहित उपचार शक्ति ही है जो हमें हर सेकंड जीवित रखती है।

आधुनिक चिकित्सा अक्सर बाहरी हस्तक्षेपों पर ध्यान केंद्रित करती है - दवाएं, सर्जरी और प्रौद्योगिकियां। ये अमूल्य हैं, विशेषकर आपात स्थितियों में। फिर भी, ये हस्तक्षेप मुख्यतः इसलिए सफल होते हैं क्योंकि शरीर सहयोग करता है। कोई दवा अपने आप ही किसी बीमारी को ठीक नहीं कर पाती; यह शरीर की अपनी तंत्रप्रणाली का समर्थन करती है। एक सर्जन फ्रैक्चर को ठीक कर देता है, लेकिन वास्तव में शरीर ही हड्डी को ठीक करता है। इस अर्थ में, डॉक्टर सहायता करते हैं; शरीर ठीक हो जाता

है।

प्राचीन उपचार परंपराओं ने सूक्ष्मदर्शी और प्रयोगशालाओं के अस्तित्व से बहुत पहले ही इसे मान्यता दे दी थी। आयुर्वेद और योग जैसी प्रणालियों ने शरीर, मन और पर्यावरण के बीच सामंजस्य पर जोर दिया। उन्होंने सिखाया कि जब खराब आहार, तनाव, नींद की कमी या नकारात्मक भावनाओं के कारण यह सामंजस्य बिखर जाता है, तो बीमारी उत्पन्न हो जाती है। इसलिए, उपचार की शुरुआत बाधाओं को दूर करने और शरीर की प्राकृतिक बुद्धिमत्ता को स्वतंत्र रूप से कार्य करने देने से होती है।

इस प्रक्रिया में मन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैज्ञानिक अध्ययन अब उस बात की पुष्टि करते हैं जिसे कभी दार्शनिक माना जाता था: विचार, भावनाएं और विश्वास शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। दीर्घकालिक तनाव प्रतिरक्षा को कमजोर करता है, उपचार को धीमा कर देता है, तथा जीवनशैली संबंधी बीमारियों को बढ़ावा देता है। दूसरी ओर, शांति, आशा और सकारात्मक दृष्टिकोण से स्वास्थ्य लाभ में तेजी आ सकती है। प्लेसीबो प्रभाव स्वयं ही शरीर द्वारा विश्वास के प्रति प्रतिक्रिया का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

जीवनशैली वह दैनिक भाषा है जिसके माध्यम से हम अपने शरीर के साथ संवाद करते हैं। पौष्टिक भोजन मरम्मत के लिए कच्चा माल प्रदान करता है। पर्याप्त नींद शरीर की मरम्मत कार्यशाला है, जहां हार्मोन पुनः संतुलित होते हैं और ऊतक पुनर्जीवित होते हैं। शारीरिक गतिविधि रक्त संचार में सुधार करती है, तथा प्रत्येक कोशिका को ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुंचाती है। मौन, चिंतन और सचेत श्वास तंत्रिका तंत्र को शांत करते हैं, जिससे एक आंतरिक वातावरण बनता है जहां उपचार फल-फूल सकता है।

"शरीर, अपने आप को ठीक करो₹ का मतलब चिकित्सा देखभाल को अस्वीकार करना या दुख की महिमा करना नहीं है। इसका अर्थ है शरीर को एक सक्रिय भागीदार के रूप में पहचानना, न कि एक असहाय पीड़ित के रूप में। इसमें थकान, दर्द या भावनात्मक परेशानी जैसे प्रारंभिक चेतावनी संकेतों को नजरअंदाज करने के बजाय उनका सम्मान करना और सुनना शामिल है। इस दृष्टिकोण से बीमारी केवल एक दुश्मन नहीं है, बल्कि अक्सर सुधार और देखभाल का आग्रह करने वाला संदेश भी है।

त्वरित समाधान की ओर तेजी से बढ़ते विश्व में, यह विचार धैर्य और जिम्मेदारी को आमंत्रित करता है। सच्चा उपचार हमेशा तुरंत नहीं होता; यह एक संरेखण की प्रक्रिया है। जब हम शरीर को स्वस्थ आदतों, भावनात्मक संतुलन और समय पर चिकित्सा सहायता प्रदान करते हैं, तो उसका जन्मजात ज्ञान प्रकट होता है।

अंततः, "स्वयं को चंगा करो₹ यह विश्वास की याद दिलाता है। हमारे भीतर के उल्लेखनीय डिजाइन पर भरोसा रखें, और विश्वास करें कि इसे बुद्धिमानी से पोषित करके, हम सबसे शक्तिशाली चिकित्सक को अपना काम करने की अनुमति देते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब - 152107

खेजड़ी कटेगी तो थार सूखेगा

डॉ० सत्यवान सौरभ

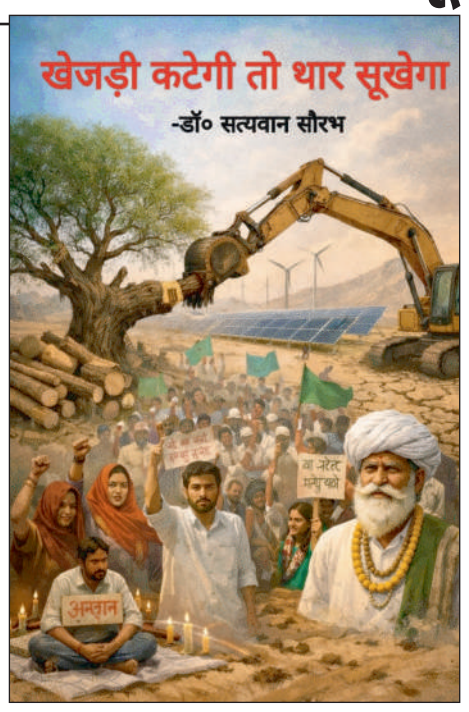

राजस्थान का थार मरुस्थल केवल रेत का विस्तार नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र है, जिसकी जीवनरेखा खेजड़ी (Prosopis cineraria) जैसे देशज वृक्षों से जुड़ी है। हाल के वर्षों में पश्चिमी राजस्थान — विशेषकर जोधपुर, बाड़मेर, नागौर और बीकानेर—में सौर ऊर्जा परियोजनाओं के तीव्र विस्तार ने इस पारिस्थितिकी को गंभीर संकट में डाल दिया है। इसी पृष्ठभूमि में उभरा खेजड़ी बचाओ आंदोलन केवल एक स्थानीय विरोध नहीं रह गया, बल्कि यह विकास के मौजूदा मॉडल, पर्यावरणीय न्याय और लोकतांत्रिक भागीदारी पर एक व्यापक और गहन बहस को जन्म देता है।

खेजड़ी को राजस्थान का राज्य वृक्ष घोषित किया जाना केवल प्रतीकात्मक नहीं था। यह वृक्ष थार की शुष्क और कठोर जलवायु में जल संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता, पशुपालन आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जैव विविधता का आधार रहा है। इसकी फलियाँ पशुओं के लिए पोषक चारे का कार्य करती हैं, पत्तियाँ हरित आहार प्रदान करती हैं और इसकी गहरी जड़ें भूजल को थामे रखती हैं। मरुस्थलीय समाज की लोकसंस्कृति में खेजड़ी केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन और सम्मान का प्रतीक है, जिसे लोकवाणी में कहा गया—"सिर साटै रूख रहे, तो भी सस्तो जाण।" ऐसे वृक्षों का बड़े पैमाने पर कटना केवल पर्यावरणीय क्षति नहीं, बल्कि सदियों से चले आ रहे मानव और प्रकृति के सहजीवन को तोड़ने जैसा है।

भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की महत्वाकांक्षा के साथ सौर ऊर्जा को विकास की धुरी बनाया है। राजस्थान को उसकी भौगोलिक स्थिति के कारण सोलर हब के रूप में विकसित किया जा रहा है और राज्य सरकार लगभग 90 गीगावाट सौर ऊर्जा लक्ष्य का पीछा कर रही है। किंतु यह प्रश्न अनिवार्य हो जाता है कि क्या हरित ऊर्जा का विस्तार हरियाली के विनाश की कीमत पर किया जा सकता है। पश्चिमी राजस्थान में स्थापित सोलर पार्क्स के लिए बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण हुआ है, जिसमें खेजड़ी जैसे संरक्षित वृक्षों की रातोंरात कटाई की गई। अनेक मामलों में पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन या तो किया ही नहीं गया, या उसे महज़ औपचारिक प्रक्रिया बनाकर छोड़ दिया गया। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक चरागाह भूमि नष्ट हुई, पशुपालकों की आजीविका प्रभावित हुई और मरुस्थलीय क्षेत्र में मिट्टी क्षरण की प्रक्रिया और तेज़ हो गई।

यह स्थिति सतत विकास की उस अवधारणा से सीधा टकराव है, जिसमें ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय को समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। खेजड़ी बचाओ आंदोलन इसी विरोधाभास को उजागर करता है। यह आंदोलन 2024 में स्थानीय स्तर पर उभरा, किंतु 2026 तक आते-आते एक संगठित जनांदोलन का स्वरूप ले चुका है। 2 फरवरी 2026 को बीकानेर के पॉलिटेक्निकल कॉलेज में आयोजित महापड़ाव इस संघर्ष का निर्णायक क्षण सिद्ध हुआ। बाज़ार बंद रहे, शैक्षणिक संस्थानों में अवकाश घोषित हुआ और हज़ारों की संख्या में लोग—संत, साधु, महिलाएँ और युवा—एक साझा मंच पर एकत्र हुए। यह दृश्य स्पष्ट करता है कि यह संघर्ष केवल किसी एक समुदाय का नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक सरोकार का विषय बन चुका है।

आंदोलन के संयोजकों ने सरकार के समक्ष यह स्पष्ट चेतावनी रखी कि यदि राज्य स्तर पर सख्त वृक्ष संरक्षण कानून नहीं लाया गया, तो आंदोलन और तीव्र होगा। क्रमिक अनशन, कैंडल मार्च और कलेक्ट्रेट घेराव जैसे शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक उपायों के माध्यम से सरकार पर दबाव बनाया गया। 4 फरवरी तक सैकड़ों अनशनकारी दर्ज किए गए, जिनमें महिलाओं की उल्लेखनीय भागीदारी इस आंदोलन को नैतिक और सामाजिक शक्ति प्रदान करती है। मातृशक्ति की यह भागीदारी केवल विरोध का प्रतीक नहीं, बल्कि ग्रामीण आजीविका, लोकसंस्कृति और भविष्य की पीढ़ियों की चिंता को भी व्यक्त करती है।

यह आंदोलन बिश्नोई समाज की उस ऐतिहासिक चेतना से गहराई से जुड़ा है, जिसकी जड़ें 1730 के खेजड़ली कांड में मिलती हैं। अमृता देवी बिश्नोई और उनके साथ 363 लोगों द्वारा खेजड़ी के संरक्षण के लिए दिया गया बलिदान विश्व इतिहास में पर्यावरण रक्षा का प्रथम संगठित उदाहरण माना जाता है। लगभग तीन सौ वर्ष बाद उसी भूमि पर खड़ा यह आंदोलन ऐतिहासिक स्मृति और वर्तमान संघर्ष को जोड़ता है। यह निरंतरता आंदोलन को केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि नैतिक वैधता भी प्रदान करती है, जो इसे सामान्य पर्यावरणीय विरोध से अलग बनाती है।

राजस्थान सरकार ने खेजड़ी को राज्य वृक्ष घोषित किया है, किंतु इसके संरक्षण के लिए प्रभावी और बाध्यकारी कानूनी ढांचे का अभाव लंबे समय से महसूस किया जा रहा है। राष्ट्रीय हरित अधिकरण और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वृक्ष संरक्षण को लेकर दिए गए निर्देशों के बावजूद ज़मीनी स्तर पर उनका अनुपालन कमजोर रहा है। आंदोलनकारियों की मुख्य मांग है कि पूरे राज्य के लिए एक सशक्त राजस्थान वृक्ष संरक्षण अधिनियम लागू किया जाए, जो विकास परियोजनाओं में वृक्षों की कटाई को अंतिम विकल्प बनाए, न कि पहली शर्त। कुछ जिलों में अस्थायी रोक या आंशिक आदेश इस संरचनात्मक समस्या का समाधान नहीं कर सकते।

यद्यपि आंदोलन स्वयं को अराजनीतिक बताता है, किंतु इसका प्रभाव राजनीति पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। "नो ट्री, नो वोट" जैसे नारों ने पर्यावरण को एक निर्णायक चुनावी मुद्दे के रूप में सामने ला दिया है। स्थानीय विधायक और सांसदों की चुप्पी पर सवाल उठ रहे हैं और सामाजिक बहिष्कार जैसी चेतावनियाँ लोकतांत्रिक दबाव के नए रूप को दर्शाती हैं। यह संकेत करता है कि भारत में पर्यावरण अब केवल नीति का विषय नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व का प्रश्न बनता जा रहा है, जिसका प्रभाव आने वाले चुनावों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

यह आंदोलन सौर ऊर्जा या विकास के विरोध में नहीं है। आंदोलनकारियों का तर्क स्पष्ट है कि ऊर्जा संक्रमण आवश्यक है, किंतु वह वन विनाश का पर्याय नहीं बन सकता। समाधान के रूप में राज्य स्तर पर सख्त वृक्ष संरक्षण कानून, सोलर परियोजनाओं में अनिवार्य हरित पट्टी, स्थानीय समुदायों की भागीदारी, बंजर भूमि और रूफटॉप सोलर को प्राथमिकता तथा पुनर्वनीकरण अभियानों की मांग रखी गई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन और अमेरिका जैसे देशों में अपनाए जा रहे ऐसे मॉडल, जहाँ सोलर पार्क्स के साथ जैव विविधता संरक्षण को जोड़ा गया है, भारत के लिए भी अनुकरणीय हो सकते हैं।अंततः खेजड़ी बचाओ आंदोलन यह स्मरण कराता है कि विकास का अर्थ केवल ऊर्जा उत्पादन, निवेश और आंकड़ों तक सीमित नहीं हो सकता। यह आंदोलन लोकतंत्र की उस शक्ति को रेखांकित करता है, जिसमें साधारण नागरिक संगठित होकर नीतियों की दिशा बदलने की क्षमता रखते हैं। एक शोधार्थी के दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि खेजड़ी बचाओ आंदोलन भारतीय पर्यावरण आंदोलनों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय बनने की क्षमता रखता है। यदि सरकार संवाद, संतुलन और संवेदनशील नीति का मार्ग अपनाती है, तो यह संघर्ष टकराव के बजाय सतत विकास का उदाहरण बन सकता है। खेजड़ी को बचाना केवल एक वृक्ष को बचाना नहीं है, बल्कि यह राजस्थान की पहचान, थार की पारिस्थितिकी और आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा का प्रश्न है।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

वर्दी का सौदा: जब कानून ब्लैकमेल की भाषा बोलने लगे
(एफआईआर न्याय पाने का दस्तावेज़ कम और डराने का औज़ार ज़्यादा)

— डॉ० प्रियंका सौरभ

हरियाणा पुलिस की एक महिला इंस्पेक्टर का निलंबन महज़ एक प्रशासनिक कार्रवाई नहीं है, बल्कि यह उस सड़ांध की ओर इशारा करता है जो वर्दी के भीतर चुपचाप फैल रही है। आरोप है कि एक कॉलोनाइज़र को तंत्र-विद्या के जाल में फँसाकर, एफआईआर रद्द कराने के बदले शारीरिक संबंध बनाए गए और बाद में डर व ब्लैकमेल के सहारे एक लाख रुपये की "मंथली" माँगी गई। यदि ये आरोप सही साबित होते हैं, तो यह मामला केवल व्यक्तिगत नैतिकता या चरित्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे आपराधिक न्याय तंत्र की विश्वसनीयता पर गहरा सवाल खड़ा करता है।

यह घटना इसलिए भी अधिक खतरनाक है क्योंकि इसमें तीन ताकतवर हथियार एक साथ इस्तेमाल हुए—वर्दी की सत्ता, अंधविश्वास का भय और कानून का डर। भारत में तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका और अंधविश्वास आज भी केवल अशिक्षा या पिछड़ेपन का प्रतीक नहीं हैं। बड़े शहरों, पढ़े-लिखे समाज और आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग में भी डर के क्षणों में विवेक कमजोर पड़ जाता है। जब इस डर को कोई वर्दीधारी अधिकारी अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करे, तो पीड़ित व्यक्ति मानसिक, सामाजिक और कानूनी रूप से पूरी तरह असहाय हो जाता है।

यह मान लेना भूल होगी कि यह कोई अकेला या अपवादात्मक मामला है। देश के अलग-अलग हिस्सों से समय-समय पर पुलिस और प्रभावशाली तंत्रों की साँठ-गाँठ के मामले सामने आते रहे हैं। कहीं जमीन विवाद में केस दर्ज करने की धमकी देकर पैसे वसूले जाते हैं, कहीं रेप या धोखाधड़ी के मामलों में "सेटिंग" के नाम पर सौदेबाज़ी होती है। कई बार आरोपी और फरियादी दोनों ही थाने के चक्कर काटते हैं, यह जानते हुए कि न्याय नहीं, समझौता ही अंतिम रास्ता है।

इस मामले में एक अहम बात यह भी है कि आरोप एक महिला अधिकारी पर हैं। समाज अक्सर यहीं आकर भटक जाता है। बहस अपराध की बजाय महिला-पुरुष, नैतिकता और चरित्र पर केंद्रित हो जाती है। लेकिन सवाल यह नहीं है कि आरोपी महिला है या पुरुष। सवाल यह है कि क्या वर्दी पहनते ही कोई व्यक्ति कानून से ऊपर हो जाता है? कानून का तकाज़ा यह नहीं कि हम आरोपी के लिंग पर बहस करें, बल्कि यह है कि सत्ता के दुरुपयोग को बिना किसी संकोच के बेनकाब किया जाए।

कानून के सामने लिंग, जाति, पद या प्रभाव नहीं—सिर्फ़ अपराध मायने रखता है। यदि आरोप सिद्ध होते हैं, तो यह अपराध सिर्फ़ ब्लैकमेल या भ्रष्टाचार का नहीं, बल्कि न्याय की अवधारणा पर सीधा हमला है। यह उस भरोसे का कत्ल है, जो आम नागरिक पुलिस और प्रशासन पर करता है।

आज एफआईआर आम आदमी के लिए सुरक्षा की गारंटी कम और डर का प्रतीक ज़्यादा बनती जा रही है। एक काग़ज़, कुछ धाराएँ और कुछ हस्ताक्षर—और पूरा जीवन शक,

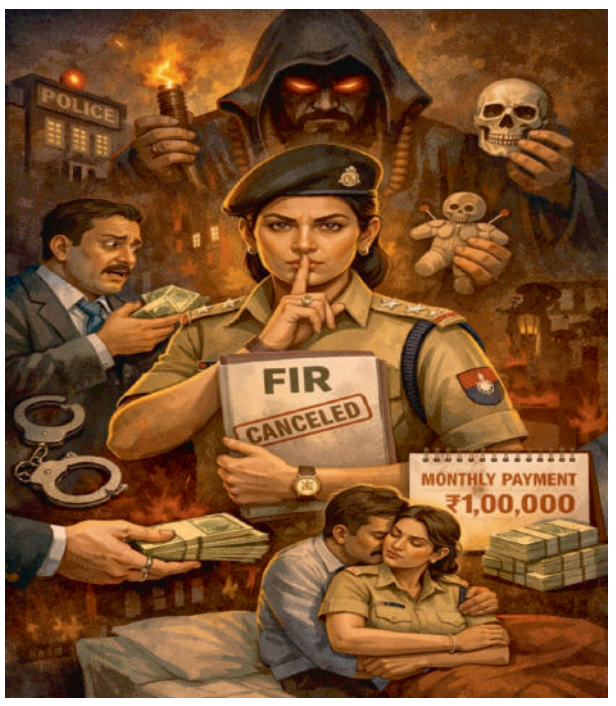

बदनामी और भय में बदल जाता है। नौकरी खतरे में पड़ जाती है, सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल हो जाती है और परिवार मानसिक दबाव में आ जाता है। जब इसी डर को सौदे की शक्ल दे दी जाती है, तब कानून न्याय का माध्यम नहीं, बल्कि बाज़ारू हथियार बन जाता है।

इस मामले में एक लाख रुपये की मंथली माँग यह साफ़ करती है कि यह कोई भावनात्मक या क्षणिक चूक नहीं थी, बल्कि सुनियोजित वसूली का तंत्र था। भारत में ऐसे 'मंथली सिस्टम' किसी से छिपे नहीं हैं। अवैध शराब, खनन माफिया, कॉलोनाइज़र, सट्टा-जुआ—हर जगह एक तय रेट, एक तय तारीख और यह भरोसा कि "सब मैनेज है।" अगर आरोप सही हैं, तो यह मानना कठिन है कि यह सब एक व्यक्ति के बूते पर हो रहा था। असली परीक्षा इस बात की है कि जाँच कितनी निष्पक्ष, कितनी गहरी और कितनी ईमानदार होती है।

दुर्भाग्य से, ऐसे मामलों में निलंबन को ही सबसे बड़ी कार्रवाई बताकर पेश कर दिया जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि निलंबन कोई सज़ा नहीं, बल्कि सिर्फ़ एक अस्थायी विराम है। कई बार जांच लंबी चलती है, सबूत कमजोर पड़ते हैं और मामला ठंडे बस्ते में चला जाता है। ज़रूरत इस बात की है कि जाँच समयबद्ध हो, कॉल डिटेल्स, बैंक लेनदेन, संपत्ति और संपर्कों की पूरी पड़ताल की जाए और दोष सिद्ध होने पर बर्खास्तगी के साथ आपराधिक मुकदमा भी चले।

यह मामला केवल पुलिस सुधार या प्रशासनिक जवाबदेही तक सीमित नहीं है। यह समाज को भी आईना दिखाता है। जब हम अंधविश्वास को पालते हैं, जब हम डर के आगे विवेक गिरवी रख देते हैं और जब हम "किसी तरह बच निकलने" की मानसिकता को सामान्य मान लेते हैं, तब ऐसे सौदे पनपते हैं। कानून तभी मज़बूत होगा, जब नागरिक डर के बजाय अधिकार की भाषा बोलना सीखेंगे।

आज डर एक कॉलोनाइज़र को था। कल यह डर किसी शिक्षक, किसी कर्मचारी, किसी छोटे व्यापारी या किसी आम नागरिक को हो सकता है। अगर कानून के रक्षक ही डर का व्यापार करने लगें, तो समाज न्याय नहीं, समझौते खोजने लगता है। यह स्थिति किसी भी लोकतंत्र के लिए बेहद खतरनाक है।

यह मामला चेतावनी है कि वर्दी जितनी ऊँची होती है, जवाबदेही उतनी ही भारी होनी चाहिए। वर्दी सम्मान का प्रतीक है, सौदेबाज़ी का लाइसेंस नहीं। अगर समय रहते ऐसे मामलों पर सख़्ती नहीं हुई, तो वह दिन दूर नहीं जब थानों में कानून की भाषा नहीं, बल्कि ब्लैकमेल की बोली आम हो जाएगी। और तब सवाल यह नहीं रहेगा कि दोषी कौन है, बल्कि यह होगा कि क्या इस देश में सचमुच न्याय नाम की कोई चीज़ बची है?

सुंदरकांड का पाठ करने से मन को शांति व तन को ऊर्जा मिलती है : "पंजाब रत्न" मनप्रीत कौर

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गांधी मार्ग स्थित परमहंस आश्रम में संकट मोचन सेना (महिला प्रकोष्ठ) पंजाब व मां सीता रसोई के संयुक्त तत्वावधान में मां सीता रसोई के प्रबन्धक आचार्य अशुंल शर्मा के विवाह की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सुंदर काण्ड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया।जिसमें कई प्रख्यात सन्तों, विद्वानों, धर्माचार्यों एवं तमाम भक्तों-श्रद्धालुओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

मां सीता रसोई की संचालिका ₹पंजाब रत्न₹ बहिन मनप्रीत कौर (लुधियाना) ने कहा कि सुंदरकांड का पाठ करने से तन को ऊर्जा व मन को शांति मिलती है।श्रीहनुमानजी महाराज समस्त सद्गुणों की खान हैं। उनमें वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि का भंडार है।जो व्यक्ति जिस कामना से उनकी पूजा-अर्चना करता है, उसकी कामना वे निश्चित ही पूर्ण करते हैं।

भगवताचार्य सुमंत कृष्ण शास्त्री एवं श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के अध्यक्ष अशोक व्यास ने कहा कि सुंदरकांड का पाठ सभी बाधाओं को दूर करने वाला है।इस पाठ को करने से श्रीहनुमानजी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं प्रमुख समाजसेवी पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्ति शिरोमणि हैं।कलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है।

कार्यक्रम के अंतर्गत मां सीता रसोई के प्रबन्धक आचार्य अंशुल शर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भारती शर्मा के विवाह की 11 वीं वर्षगांठ पर सभी के द्वारा उनका सम्मान किया गया।साथ ही बधाइयां दी गई।

इसके अलावा आचार्य प्रथमेश लाल गोस्वामी के द्वारा होली के रसियाओं का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया। कार्यक्रम में बल्देव स्थित दाऊजी मंदिर के रिसीवर आर.के. पाण्डेय, आचार्य विनय त्रिपाठी, संगीताचार्य पण्डित बनवारी महाराज, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, आचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी, सन्त रसिया बाबा महाराज, आचार्य विमल कृष्ण पाठक, आचार्य अश्विनी मिश्रा, सन्त रामदास महाराज (अयोध्या), पण्डित बिहारीलाल शास्त्री, प्रख्यात चित्रकार ₹यूपी रत्न₹ द्वारिका आनन्द, पण्डित आर.एन. द्विवेदी (राजू भैया), युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य युगल किशोर कटारे, चैतन्य किशोर कटारे, आचार्य मुकेश मोहन शास्त्री, धर्मवीर शास्त्री, आचार्य ईश्वरचन्द्र रावत, डॉ. राम वैद्य, पण्डित राजेश पाठक आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।कार्यक्रम का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

राउरकेला स्मार्ट सिटी में मुफ्त इंटरनेट सेवा की मांग तेज, प्रधानमंत्री को भेजा गया प्रस्ताव

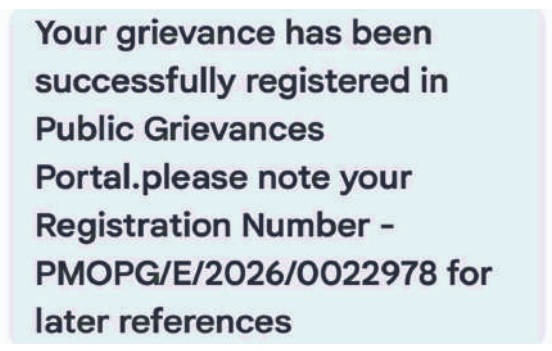

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित हो रहे राउरकेला में सभी क्षेत्रों में मुफ्त सार्वजनिक इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने की मांग उठने लगी है।इस संबंध में सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार यादव ने माननीय प्रधानमंत्री को पत्र प्रेषित कर राउरकेला महानगर निगम क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से मुफ्त वाई-फाई सुविधा शुरू करने का अनुरोध किया है।

अपने पत्र में उन्होंने कहा है कि राउरकेला देश के प्रमुख औद्योगिक नगरों में शामिल होने के साथ-साथ स्मार्टसिटी मिशन के अंतर्गत चयनित शहर है, जहां आधुनिक शहरी सुविधाओं और डिजिटल सेवाओं का विस्तार प्राथमिकता होनी चाहिए। वर्तमान समय में इंटरनेट शिक्षा, ई-गवर्नेंस, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार और व्यापार से जुड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है।इसके बावजूद शहर के कई क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण इंटरनेट सुविधा समान रूप से उपलब्ध नहीं है, जिससे डिजिटल असमानता बनी हुई है।

राजकुमार यादव ने सुझाव दिया है कि शहर के प्रमुख बाजारों, बस स्टैंड, पार्कों, शैक्षणिक संस्थानों, सार्वजनिक स्थलों और प्रमुख चौक-चौराहों पर मुफ्त वाई-फाई सुविधा उपलब्ध कराई जाए। उनका कहना है कि इससे न केवल छात्रों, युवाओं और छोटे व्यापारियों को लाभ मिलेगा, बल्कि डिजिटल इंडिया और स्मार्ट सिटी मिशन को भी मजबूती मिलेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि मुफ्त सार्वजनिक इंटरनेट सेवा से शहर में निवेश, पर्यटन और डिजिटल गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा तथा राउरकेला एक तकनीक-सक्षम और आधुनिक शहर के रूप में अपनी पहचान को और मजबूत कर सकेगा।

ऑपरेशन प्रहार–2 के तहत अमृतसर देहाती पुलिस की बड़ी कार्रवाई: गैंगस्टरों और वांछित अपराधियों पर शिकंजा

अमृतसर देहाती, 09 फरवरी (साहिल बेरी)

प्रदेश में संगठित अपराध के खात्मे के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत "ऑपरेशन प्रहार–2" के अंतर्गत अमृतसर देहाती पुलिस द्वारा जिले भर में व्यापक स्तर पर खुफिया जानकारी आधारित एवं सुनियोजित कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

यह कार्रवाई श्री इंदरबीर सिंह, आईपीएस, डीआईजी एडमिन पीएपी तथा श्री सुहैल मीर, आईपीएस, एसएसपी अमृतसर देहाती के नेतृत्व में की गई। दोनों वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वयं थाना कंबो के अंतर्गत आते गांव माहल में एक विशेष कॉर्डन एंड सर्च ऑपरेशन की निगरानी की।

इस दौरान गांव माहल क्षेत्र की घेराबंदी कर विभिन्न घरों की गहन तलाशी ली गई, विशेष रूप से गैंगस्टरों एवं वांछित अपराधियों से जुड़े व्यक्तियों के घरों में। संवेदनशील स्थानों पर विशेष नाकाबंदी की गई तथा वाहनों की सघन जांच भी की गई। जिले भर में कुल 120 स्थानों पर छापेमारी की गई, जिसके दौरान 83 व्यक्तियों को काबू कर गिरफ्तार किया गया। पकड़े गए व्यक्तियों से पूछताछ की जा रही है।

समन्वित तलाशी अभियान के उपरांत डीआईजी एवं एसएसपी द्वारा जिले के सभी गजटेड अधिकारियों (GOs) के साथ एक विशेष समीक्षा बैठक की गई। बैठक में चल रहे अभियानों की प्रगति की समीक्षा की गई तथा "ऑपरेशन प्रहार–2" को और अधिक प्रभावी व सफल बनाने के लिए रणनीति पर विस्तृत चर्चा की गई। अधिकारियों को भविष्य में भी इसी प्रकार संयुक्त एवं तीव्र कार्रवाई जारी रखने के निर्देश दिए गए।

अमृतसर देहाती पुलिस ने स्पष्ट किया कि गैंगस्टर नेटवर्क एवं संगठित अपराध के विरुद्ध ऐसी सख्त और निरंतर कार्रवाइयां आगे भी जारी रहेंगी। जिले में कानून-व्यवस्था की स्थिति को मजबूत करना तथा आम जनता को सुरक्षित और शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करना पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

"रक्तदान महादान है, हर नागरिक को इस में आगे आना चाहिए" – सुनील गोयल डिंपल

संगरूर,9 फ़रवरी (जगसीर सिंह) -

पंजाब ऊर्जा विकास एजेंसी के पूर्व निदेशक एवं भाजपा पंजाब के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सुनील गोयल डिंपल ने अपने पुत्र एडवोकेट देवांशु गोयल और कमल सिंगला के साथ लायंस क्लब रॉयल संगरूर द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान किया। यह शिविर अग्रवाल सभा धर्मशाला, संगरूर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर लायंस क्लब रॉयल संगरूर के अध्यक्ष श्री भूपेश भारद्वाज, चेयरमैन सीए अशोक तथा सचिव सीए मोहित ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। शिविर के दौरान कुल 121 यूनिट रक्त एकत्र किया गया, जिससे कई जरूरतमंद मरीजों के जीवन को बचाने में सहायता मिलेगी।

रक्तदान शिविर में प्रकाश गर्ग (पूर्व मंत्री, पंजाब), जतिंदर कालड़ा (वरिष्ठ भाजपा नेता), बदरी जिंदल (अग्रवाल सभा अध्यक्ष), सुशील जैन, एडवोकेट साहनी साहब, एडवोकेट कमल आनंद, धरम पाल बाटिश, ध्रुव गर्ग, दाक्षी गुप्ता, कुलवीर, कृष मेहरा, वरुण एवं संजिव विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सुनील गोयल डिंपल ने कहा कि "रक्तदान एक महान सेवा है। इससे जरूरतमंदों की जान बचाई जा सकती है और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस पुण्य कार्य में आगे आना चाहिए।

नवीन ने मोहन को पत्र लिखा: उन्होंने कहा कि राज्य के किसान बहुत दुखी हैं

मनोरंजन शासमल स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी को एक चिट्ठी लिखी है। चिट्ठी में नवीन ने लिखा, राज्य में मंडियां अब जुल्म का अड्डा बन गई हैं। अलग-अलग इलाकों में 5 से 7 kg प्रति क्विंटल गेहूं की कटाई-छंटाई हो रही है। मिलर-अधिकारी के शहद-शहद घोटाले की वजह से किसानों को उनके दाम नहीं मिल रहे हैं।नवीन ने लेटर में कहा है कि इनपुट सब्सिडी देने के लिए 150 क्विंटल की सीलिंग के प्रस्ताव का उल्लंघन हो रहा है। दूसरी ओर, नवीन ने लेटर में कहा है कि यह सीलिंग ज़्यादा पैदावार करने वाले किसानों के लिए सज़ा है।

ईडी का आरोप झारखंड ग्रामीण विकास के इंजिनियरों ने योजना लागु करने के नाम पर वसूले 80 करोड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, इधर झारखंड में सरकारी खजाना खाली है यह जगजाहिर है उधर भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबा झारखंड ग्रामीण विकास विभाग से जुड़े इंजीनियरों ने विकास योजनाओं को लागू करने के दौरान 80 करोड़ रुपये की वसूली की है. प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा जारी जांच के दौरान संबंधित इंजीनियरों से की गयी पूछताछ से इसकी पुष्टि हुई है. पूछताछ के दौरान कई ठेकेदारों ने भी कमीशन देने की बात स्वीकार की. ईडी ने तत्कालीन मंत्री आलमगीर आलम के पीए संजीव लाल की डायरी में लिखे कोड वर्ड को डिकोड करने के बाद उनसे पूछताछ की .संजीव लाल के पास से मिली डायरी में टीयू, आरएल सहित अन्य शब्द और उनके सामने अंक लिखे हुए थे. पूछताछ के दौरान पता चला कि टीयू का अर्थ झारखंड स्टेट रूरल रोड डेवलपमेंट अथॉरिटी (जेएसआरआरडीए) के मुख्य अभियंता सिंगराय टूटी हैं. वह अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं. इसी तरह आरएल का अर्थ मुख्य अभियंता राजीव लोचन है. सिंगराय टूटी ने ईडी द्वारा जारी समन के आलोक में पूछताछ के बाद अपना बयान दर्ज कराया था. उन्होंने ईडी को दिये गये बयान में यह स्वीकार किया कि वे जेएसआरआरडीए द्वारा संचालित 600 करोड़ रुपये की योजनाओं में से तीन प्रतिशत की दर से बतौर कमीशन 18 करोड़ रुपये वसूल किये थे. यह रकम संजीव लाल को दी गयी थी. वह अप्रैल 2023 में तत्कालीन मंत्री आलमगीर आलम से मिले थे. इस मुलाकात में उन्होंने अपने हिस्से के कमीशन की बात कही थी. साथ ही यह भी कहा था कि यह सब संजीव लाल देखते हैं. ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल के मुख्य अभियंता सुरेंद्र कुमार ने भी ईडी द्वारा जारी किये गये समन के आलोक में अपना बयान दर्ज कराया था. साथ ही विकास योजनाओं की लागत में से 15 करोड़ रुपये बतौर कमीशन वसूल कर देने की बात कही थी.

लिंगराज महाप्रभु की जागर यात्रा पर रिव्यू मीटिंग मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन की अध्यक्षता में हुई

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: लिंगराज महाप्रभु की जागर यात्रा को उसके व्यवस्थित रीति-रिवाजों और रस्मों के साथ सफल बनाने के लिए अलग-अलग डिपार्टमेंट, एजेंसी और सर्विस प्रोवाइडर के प्रतिनिधियों के साथ एक रिव्यू मीटिंग हुई।

आज लोक सेवा भवन में लॉ डिपार्टमेंट कॉन्फ्रेंस रूम में हुई मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए मंत्री हरिचंदन ने कहा कि जागर यात्रा जैसा उत्सव अकेले किसी एक व्यक्ति की कोशिशों से कभी मुमकिन नहीं होता। इसके लिए सर्विस प्रोवाइडर, एजेंसी, अलग-अलग डिपार्टमेंट के अधिकारी और कर्मचारी, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, मेट्रोपॉलिटन कॉर्पोरेशन, फायर सर्विस और मीडिया की अहम भूमिका है। मंत्री ने भक्तों के व्यवस्थित दर्शन से लेकर महादीप जलाने तक, समय पर सब कुछ आसानी से पूरा हो, इस पर ज़ोर दिया और सभी से सहयोग मांगा। मंत्री ने जागर के दौरान नकली पास होल्डर और दूसरे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। लिंगराज महाप्रभु जग यात्रा का इंतजार राज्य या देश ही नहीं, बल्कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले शिव भक्तों को रहता है। इसलिए इसे सफल बनाने के लिए बैठक में कई मुद्दों पर चर्चा की गई।

इस अवसर पर जग के दौरान मंदिर परिसर की साफ-सफाई, भक्तों की सुरक्षा के लिए लाइटिंग, बैरिकेडिंग, पार्किंग, सफाई, पीने के पानी की व्यवस्था, पर्याप्त छाया और वेंटिलेशन की व्यवस्था, अग्नि सुरक्षा, भीड़ और ट्रैफिक मैनेजमेंट, मंदिर और आसपास के इलाकों की सजावट, कंट्रोल रूम, सीसीटीवी सिस्टम और मीडिया के जरिए इसका सुचारू प्रसारण करने की व्यवस्था की गई।

इस बैठक में भुवनेश्वर एकम के विधायक श्री बाबू सिंह, भुवनेश्वर महानगर निगम की मेयर श्रीमती. इस अवसर पर सुलोचना दास, कानून विभाग के प्रधान प्रशासनिक सचिव डॉ. पुरात मोहन सामल, देवबत्तार कमिश्नर श्री ललातेन्दु जेना, द्वैत नगरी के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त श्री नरसिंह भोला, खुर्दा के जिलाधिकारी श्री अमृत पुद्धराज, भुवनेश्वर के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट श्री रमेश कुमार जेना, कानून विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री शिव प्रसाद महापात्र, आबकारी विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री रुद्र नारायण मोहंती सहित मंदिर भर्ती, सेवाएं, भारतीय धरोहर विभाग, धरोहर विभाग, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, टीपीडीओसीएल, वाटको, क्रट, कैपिटल अस्पताल के वरिष्ठ अधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

वेलेंटाइन सप्ताह: प्रेम का महोत्सव, तर्कों का अवकाश

7 से 14 फ़रवरी तक मनाया जाने वाला प्रेम, समर्पण और त्याग का यह महान पर्व—वेलेंटाइन सप्ताह—अब किसी एक संस्कृति या भूगोल तक सीमित नहीं रहा। यह ऐसा सर्वधर्म समभावी पर्व है, जिसमें जाति, वर्ग, मोहल्ला और यहाँ तक कि मोबाइल नेटवर्क भी बाधा नहीं बनता। संत वैलेंटाइन की स्मृति में शुरू हुआ यह सप्ताह आज युवाओं की स्मृति-शक्ति, जेब की क्षमता और झूठ बोलने की कला की सामूहिक परीक्षा बन चुका है।

यह वर्ष का इकलौता सप्ताह है, जिसमें माताओं को अपने सुपुत्रों से यह नहीं कहना पड़ता—"बेटा, आज त्योहार है, कम से कम नहा तो ले।" चमत्कार देखिए, जो युवा साल भर 'कल नहाऊँगा' की नीति पर चलते हैं, वे इस सप्ताह रोज़ सुबह-सुबह उठकर ऐसे नहाते हैं मानो इंटरव्यू देने जाना हो। परफ़्यूम की ऐसी वर्षा होती है कि मच्छर तक भ्रमित होकर काटने से पहले सोच में पड़ जाता है। इसी सप्ताह "मम्मी, आज सहेली के घर ग्रुप स्टडी है" कहने वाली कन्याओं को उनकी विवश मम्मियाँ मुस्कान के साथ विदा करती हैं। अतिरिक्त मेकअप, मैचिंग ड्रेस और हाई हील्स उस 'ग्रुप स्टडी' का अनिवार्यसिलेबस है, जिसे दकियानूसी माता-पिता कभी समझ ही नहीं पाए। उन्हें क्या पता कि आजकल पढ़ाई आँखों से कम और दिल से ज़्यादा होती है।

वेलेंटाइन सप्ताह युवाओं के लिए किसी सरकारी परियोजना से कम नहीं। रोज़ डे से शुरू होकर प्रपोज़ डे, चॉकलेट डे, टेडी डे, प्रॉमिस डे, हग डे और किस डे—हर दिन एक नई ज़िम्मेदारी, एक नया ख़र्च और एक नया जोखिम। अंततः आता है 14 फ़रवरी—वेलेंटाइन डे। इस दिन कामदेव इतने सक्रिय हो जाते हैं कि गुलाब पचास रुपये का नहीं, आत्मसम्मान गिरवी रखकर खरीदा जाता है। हालाँकि हर प्रेमकथा को हैप्पी एंडिंग नसीब नहीं होती। 7 फ़रवरी को शुरू हुई कई प्रेम-यात्राएँ 13 तक पहुँचते-पहुँचते 'ब्रेकअप' नामक दैत्य द्वारा समाप्त कर दी जाती हैं। ऐसे पराजित प्रेमी आगे चलकर शायर बनते हैं और सोशल मीडिया पर "अब प्यार से भरोसा उठ गया है" लिखते हुए पाए जाते हैं—हालाँकि अगले वेलेंटाइन तक भरोसा फिर लौट आता है।

इस सप्ताह पार्कों की सभी बेंचें प्रेमी युगलों के नाम आरक्षित हो जाती हैं। बुज़ुर्ग यदि वहाँ से गुज़र भी जाएँ, तो प्रेमी युगल बिना किसी संकोच के अपने प्रेम-साधना में लीन रहते हैं। यह नई पीढ़ी के आत्मविश्वास और एकाग्रता का जीवंत उदाहरण है। झुरमुट, जो सामान्य दिनों में पक्षियों का आशियाना होते हैं, इस सप्ताह दो-पाए प्राणियों के ध्यान-केंद्र बन जाते हैं।

प्रेमी युगल इस दौरान इतने बौराए होते हैं कि आम के पेड़ तक उनसे प्रेरणा लेने लगते हैं। पिछले वर्ष का एक दृश्य याद आता है—एक प्रेमी युगल सिनेमा हॉल में फ़िल्म ख़त्म होने के बाद भी सीट पर बैठा रहा। मैनेजर ने टोका तो दोनों एक साथ बोले—"कंडक्टर भैया, स्टॉपेज आ गया क्या?"

बहुत कम लोग जानते हैं कि 15 फ़रवरी को प्रेमी-प्रेमिकाएँ मौन व्रत रखते हैं। वैज्ञानिक कारण यह है कि पूरे सप्ताह अत्यधिक तुतलाने से वोकल कॉर्ड्स को विश्राम चाहिए होता है। उस दिन मोबाइल भी राहत की साँस लेता है।

इन दिनों मधुमक्खियाँ भी भ्रमित हैं। फूलों पर मंडराने के बजाय वे ऊँची अट्टालिकाओं की ओर देखने लगी हैं, क्योंकि फूल अब वहीं उग आए हैं—ब्रांडेड, महंगे और ईएमआई पर उपलब्ध।

कुल मिलाकर वेलेंटाइन सप्ताह प्रेम का नहीं, व्यवस्था का उत्सव है—जहाँ दिल धड़कता है, दिमाग़ छुट्टी पर होता है और बाज़ार पूरे शबाब पर। प्रेम भले क्षणिक हो, पर उसके बिल लंबे समय तक याद रहते हैं।

जब हार ने रच दी पहचान: टी20 विश्व कप में नेपाल का उदय

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

जब इतिहास करवट बदलता है, तो वह शोर मचाकर नहीं आता, बल्कि मैदान पर उतरकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। 8 फरवरी 2026 की शाम वानखेड़े स्टेडियम में कुछ ऐसा ही देखने को मिला। समुद्री हवा में घुली रोशनियों की चमक, हजारों दर्शकों की थमी सांसें और करोड़ों दिलों की उम्मीदें एक साथ स्पंदित हो रही थीं। यह कोई साधारण मुकाबला नहीं था, बल्कि छोटे सपनों और बड़े नामों के बीच होने वाली निर्णायक भिड़ंत थी। एक ओर दो बार का विश्व विजेता इंग्लैंड अपने अनुभव और प्रतिष्ठा के साथ खड़ा था, तो दूसरी ओर नेपाल, जिसके पास खिताब नहीं थे, लेकिन हौसलों की अपार पूंजी थी। उसी पल यह साफ हो गया था कि यह मुकाबला आंकड़ों का नहीं, बल्कि जज्बे और आत्मबल का संग्राम बनने वाला है।

टॉस जीतकर इंग्लैंड ने जब पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया, तो उसने अपने अनुभव और रणनीति पर पूरा भरोसा जताया। हालांकि शुरुआती ओवरों में ही नेपाल ने इस भरोसे को चुनौती दे दी। फिल साल्ट का जल्दी पवेलियन लौटना इंग्लैंड के लिए एक चेतावनी संकेत था। इसके बाद जोस बटलर ने कुछ रन जोड़े, लेकिन आउट होने के बाद टॉम बैंटन आए और जल्दी आउट हो गए, फिर जैकब बेथेल और कप्तान हैरी ब्रुक ने पारी को संभाला। दोनों ने संयम और आक्रमण का संतुलित प्रदर्शन करते हुए टीम को स्थिरता प्रदान की। हर रन के साथ इंग्लैंड की पारी मजबूत होती गई। ब्रुक का नेतृत्व और बेथेल की तकनीक यह साबित कर रही थी कि टीम दबाव में भी संतुलन बनाए रख सकती है, लेकिन नेपाल का आत्मविश्वास भी लगातार बढ़ता जा रहा था।

इस दौरान नेपाल के गेंदबाजों और फील्डरों की ऊर्जा और समर्पण देखते ही बनता था। दीपेंद्र सिंह ऐरी की घूमती गेंदों ने बल्लेबाजों को बार-बार भ्रमित किया, जबकि नंदन यादव ने सटीक लाइन-लेंथ से रन गति पर अंकुश लगाया और संदीप लामिछाने ने भी विकेट लेकर दबाव बनाया। फील्डर हर गेंद पर पूरे जोश से जुटे रहे—कभी बाउंड्री पर छलांग लगाकर, तो कभी तेज थ्रो से आसान रन रोककर। यह केवल एक मुकाबला नहीं था, बल्कि अपनी पहचान स्थापित करने का दृढ़ संकल्प था। अंत में विल जैक्स की विस्फोटक बल्लेबाजी से इंग्लैंड 184 रन तक पहुंचा, जो मजबूत जरूर था, लेकिन नेपाल के हौसलों को तोड़ने के लिए पर्याप्त नहीं लग रहा था।

लक्ष्य का पीछा करते हुए नेपाल ने शुरुआत से ही यह स्पष्ट कर दिया कि वह डर और दबाव से मुक्त होकर खेलने आया है। कुशल भुर्तेल ने आसिफ शेख के साथ आक्रामक शुरुआत की और बड़े शॉट लगाकर इंग्लैंड के गेंदबाजों पर दबाव बना दिया। आसिफ के आउट होने के बाद रोहित पौडेल ने धैर्य और समझदारी से पारी को आगे बढ़ाया, हालांकि कुशल भुर्तेल भी जल्द आउट हो गए। फिर दीपेंद्र सिंह ऐरी के साथ उन्होंने टीम को मजबूत आधार प्रदान किया। हर चौके और छक्के के साथ स्टेडियम का शोर बढ़ता गया और दर्शकों को महसूस होने लगा कि वे किसी ऐतिहासिक पल के साक्षी बन रहे हैं। यह केवल रन चेज नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान और विश्वास की यात्रा थी।

गुरुग्राम में भव्य हिन्दू सम्मेलन संपन्न, सामाजिक एकता का दिया संदेश

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम। हिन्दू समाज को संगठित करने और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत करने के उद्देश्य से न्यू कॉलोनी, गुरुग्राम स्थित जीतेंद्र बहल पार्क में आयोजित हिन्दू सम्मेलन रविवार को सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने भाग लिया और सामाजिक समरसता, धर्म रक्षा व समानता का संकल्प लिया।

सम्मेलन के दौरान वक्ताओं ने कहा कि हिन्दू संस्कृति केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, समानता और मानव कल्याण की परंपरा है। समाज को संगठित रखकर ही राष्ट्र को सशक्त बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ-साथ समाजहित से जुड़े विषयों पर भी विचार रखे गए।

आयोजन समिति की ओर से बताया गया कि इस प्रकार के सम्मेलन समाज में सकारात्मक ऊर्जा, एकता और जागरूकता का कार्य करते हैं। सम्मेलन में संतों के मार्गदर्शन और विचारों ने उपस्थित जनसमूह को प्रेरित किया।

कार्यक्रम का समापन "ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः" के सामूहिक उद्घोष के साथ हुआ। आयोजकों ने सभी अतिथियों, वक्ताओं और क्षेत्रवासियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजन जारी रखने की बात कही।

डॉ. परमेश्वर अरोड़ा ने कहा, "हिन्दू सम्मेलन समाज को

जोड़ने, संस्कृति को सशक्त करने और सामाजिक समरसता को मजबूत करने का मंच बना है। बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी यह दर्शाती है कि समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों और एकता के प्रति जागरूक है। यह आयोजन सेवा, संस्कार और संगठन के संकल्प के साथ पूरी तरह सफल रहा।"

एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस पर गहन मंथन, वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. के.सी. जैन हुए सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

सतना। पन्ना रोड स्थित स्थानीय होटल अप एंड एवव में सतना एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (शिशु रोग विशेषज्ञ शाखा, सतना) द्वारा एक विशेष वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मैहर के वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. के.सी. जैन रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत सतना एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स के अध्यक्ष डॉ. वी.के. गांधी द्वारा सभी अतिथियों एवं शिशु रोग विशेषज्ञों के स्वागत के साथ की गई। उन्होंने संस्था की स्थापना, उद्देश्य एवं गतिविधियों की जानकारी दी। इसके पश्चात पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से एंटीबायोटिक के विवेकपूर्ण उपयोग एवं एंटीबायोटिक के विरुद्ध कीटाणुओं में बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता (एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस) जैसे गंभीर विषय पर विस्तार से चर्चा की गई। उपस्थित सभी विशेषज्ञों ने एंटीबायोटिक के अनावश्यक एवं अंधाधुंध प्रयोग से होने वाले दुष्प्रभावों पर चिंता व्यक्त

करते हुए इसके प्रति जन-जागरूकता की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में सर्दी, खांसी एवं जुकाम जैसी सामान्य लेकिन महत्वपूर्ण बाल्यावस्था की बीमारियों पर प्रोफेसर डॉ. आमडैकर के शैक्षणिक वीडियो का भी प्रसारण किया गया, जिसे चिकित्सकों ने अत्यंत उपयोगी बताया।

इस अवसर पर मैहर से पधारे मुख्य अतिथि डॉ. के.सी. जैन के जीवन परिचय एवं शिशु रोग चिकित्सा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान के साथ-साथ संगीत कला के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में सचिव डॉ. राकेश जैन ने मुख्य अतिथि का परिचय एवं सचिव प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि डॉ. के.सी. जैन ने अपने उद्बोधन में बच्चों के इलाज में मानवीय संवेदना, अभिभावकों की भावनाओं एवं चिंताओं को समझते हुए उपचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने अपने 50 वर्षों के चिकित्सकीय अनुभव साझा करते हुए कई रोचक एवं प्रेरणादायी प्रसंग सुनाए, जिन्हें उपस्थित चिकित्सकों ने सराहा।

कार्यक्रम में डॉ. प्रभात सिंह एवं डॉ. संजीव प्रजापति को एमपी पेडीकान में बेस्ट पेपर अवार्ड प्राप्त करने पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

आभार प्रदर्शन डॉ. सुनील कारकुर द्वारा किया गया, जबकि डॉ. विजेता राजपूत ने कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी संचालन किया।

कार्यक्रम में डॉ. सतेंद्र सिंह, डॉ. आर.के. मिश्रा, डॉ. राकेश अग्रवाल, डॉ. प्रभात सिंह, डॉ. चंदन, डॉ. अमित सिंह, डॉ. संजीव प्रजापति, डॉ. दिलीप चौरसिया, डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. सुधांशु गर्ग, डॉ. सुदीप अवधिया, डॉ. पटेल, डॉ. रमेश अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में शिशु रोग विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को चिकित्सकों ने ज्ञानवर्धक एवं अत्यंत उपयोगी बताया और भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजनों की आवश्यकता पर सहमति जताई।

कवि कृष्ण कुमार सैनी को मिला "समाज सेवा कला सेवा रत्न" सम्मान

सामाजिक कार्यों के फल स्वरुप हुआ कृष्ण कुमार सैनी का सम्मान

दौसा। श्री साहित्य मंडल नाथद्वारा संस्था द्वारा प्रतिवर्ष साहित्यकारों को विभिन्न क्षेत्र में उनकी योग्यता अनुसार सैंकड़ों साहित्यकारों को सम्मानित किया जाता है।

साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने बताया कि दौसा की मारुति कॉलोनी निवासी युवा कवि कृष्ण कुमार सैनी का समाज सेवा एवं सामाजिक कार्यों के फलस्वरूप समाज सेवा कला सेवा रत्न से सम्मानित किया गया है।

डॉ. अंजीव अंजुम ने बताया कि सैनी को सम्मान में दुपट्टा, शोल, माला, प्रसाद , श्री नाथ जी का विग्रह, राजस्थानी पगड़ी, परिचय सहित सम्मान पत्र भी भेंटकर सम्मानित किया गया।

कुमार जे संतोष ने बताया कि कवि सैनी को सम्मान मिलने से विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक संगठनों ने खुशी जाहिर की है।

पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने श्री दरबार साहिब और जैन मंदिर में टेका माथा

अमृतसर, 9 फरवरी (साहिल बेरी)

पंजाब के राज्यपाल एवं चंडीगढ़ के प्रशासक श्री गुलाब चंद कटारिया ने बीती देर शाम श्री दरबार साहिब में माथा टेककर सर्वभलाई की अरदास की। राज्य में नशों के खिलाफ चल रही मुहिम को और अधिक मजबूत करने के उद्देश्य से शुरु की जा रही तीव्र नशा-विरोधी जनजागरूकता अभियान से पूर्व उन्होंने गुरु साहिब का आशीर्वाद लिया। इसके बाद आज सुबह राज्यपाल पंजाब ने श्री जैन मंदिर में भी माथा टेका। नशों के खिलाफ पैदल यात्रा की जानकारी साझा करते हुए राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि पंजाब रेड क्रॉस सोसायटी के प्रयासों से आयोजित इस पैदल यात्रा का उद्देश्य नशों के दुष्प्रभावों के बारे में जनजागरूकता फैलाना है। उन्होंने दोहराया कि नशों के खिलाफ लड़ाई में कानून का सख्ती से पालन, निरंतर जनजागरूकता के साथ-साथ पुनर्वास और रोजगार सृजन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने समाज के सभी वर्गों से इस अभियान को जन आंदोलन बनाने की अपील की। उन्होंने बताया कि इस चार दिवसीय अभियान के तहत सीमावर्ती जिलों तरनतारन, फिरोजपुर और फाजिल्का में चार दिन की जागरूकता पैदल यात्रा निकाली जाएगी, जिसका उद्देश्य नशों के खिलाफ जनभागीदारी को सशक्त बनाना है। कार्यक्रम के अनुसार 9 फरवरी को तरनतारन शहर में, 10 फरवरी को सरागढ़ी मेमोरियल से गवर्नमेंट स्कूल ऑफ एमिनेंस, फिरोजपुर शहर तक, 11 फरवरी को संजीव सिनेमा, फाजिल्का से घंटाघर, फाजिल्का तक तथा 12 फरवरी को नगर निगम कार्यालय, अबोहर से डी.ए.वी. कॉलेज, अबोहर तक जागरूकता पैदल यात्रा आयोजित की जाएगी।

राज्यपाल ने जोर देते हुए कहा कि नशों की समस्या केवल स्थानीय या राज्य स्तर की नहीं, बल्कि एक वैश्विक चुनौती है, जिसके समाधान के लिए निरंतर और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि नशों के खिलाफ लड़ाई निरंतर और ईमानदार होनी चाहिए तथा सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और शैक्षणिक संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों एवं अन्य संस्थाओं को इस जन आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और सहयोग देना चाहिए। यह अभियान पंजाब को नशा-मुक्त बनाने के साझा लक्ष्य की ओर समाज के सभी वर्गों को एकजुट करने का प्रयास है।

कोलंबो में आयोजित सेपक टकराव चैंपियनशिप में भारत का पांच स्वर्ण पदक जीतना अप्रत्याशित: पेरिका सुरेश

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कोलंबो (श्रीलंका) में आयोजित साउथ एशिया सेपक टकराव चैंपियनशिप में भारत के पुरुष एवं महिला सेपक टकराव खिलाड़ियों ने पांच स्वर्ण पदक जीत कर इतिहास रच दिया है।अभी हाल ही में टोक्यो में आयोजित एशियाई खेल 2026 के टेस्ट इवेंट में भारतीय पुरुष सेपक टकराव टीम ने स्वर्ण पदक जीतकर भारत का नाम रोशन किया है।

भारतीय सेपक टकराव टीम की इस अप्रत्याशित जीत पर साउथ एशिया सेपक टकराव ऑर्गेनाइजेशन के प्रेसिडेंट एस.आर.प्रेम राज जी, सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट जी.श्रीनिवासलू, संयुक्त सचिव सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ

इंडिया पेरिका सुरेश एवं जनरल सेक्रेटरी नरेश कुमार ने समस्त खिलाड़ियों, कोच, मैनेजमेंट स्टाफ और सेपक टकराव फेडरेशन फैमिली के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि यह ऐतिहासिक जीत सेपक टकराव खेल को मजबूत पहचान देगा तथा युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा एवं ऊर्जा का काम करेगा। संयुक्त सचिव पेरिका सुरेश ने कहा कि सेपक टकराव की प्रबंधन समिति के कुशल नेतृत्व में यह खेल तेजी से लोकप्रियता के नए-नए मुकाम प्राप्त कर रहा हैं। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खेलो इंडिया खेलो के सपनों को साकार करते हुए भारत के खिलाड़ियों ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कराई हैं। भारत में यह खेल लोकप्रियता के नए-नए कीर्तिमान बनाएं तथा युवाओं के लिए खेल भावना के प्रसार का स्रोत बने, इसी कामना के साथ मैं इस जीत पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूं।

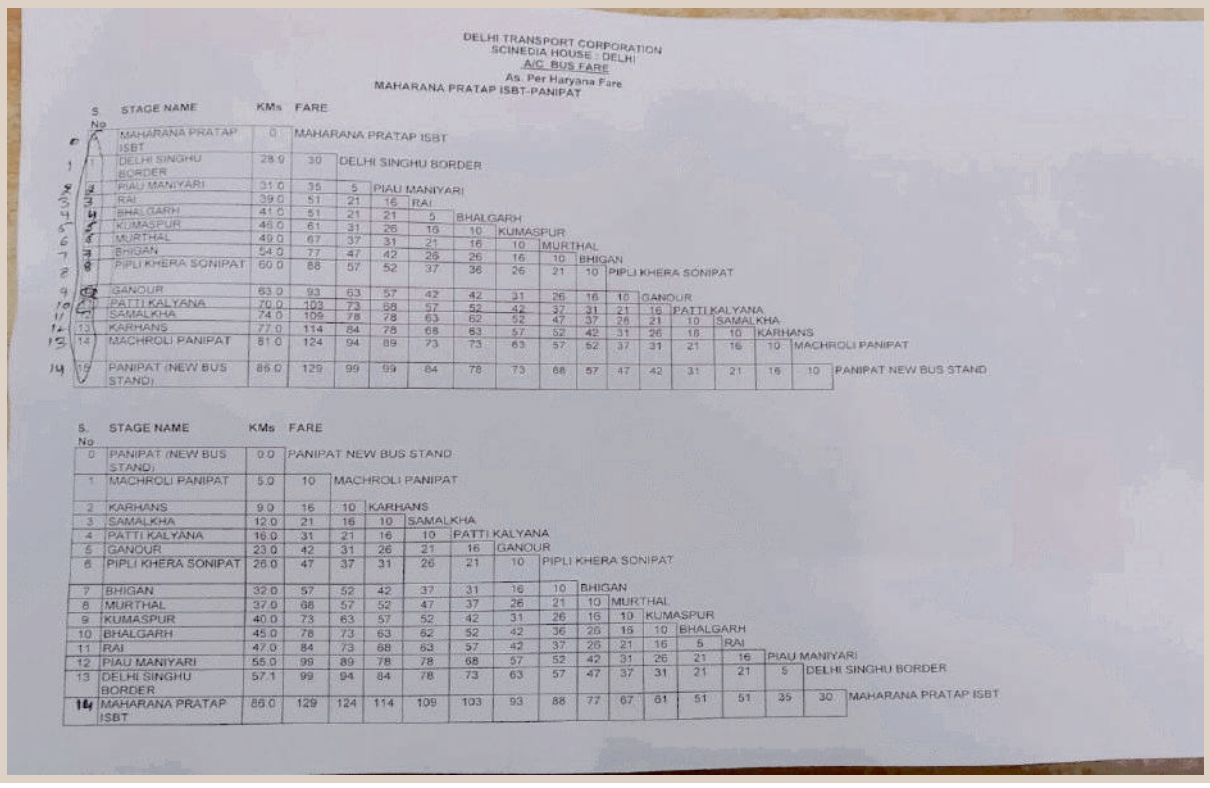

DELHI TRANSPORT CORPORATION
SCINDIA HOUSE DELHI
A/C BUS FARE
As Per Haryana Fare
MAHARANA PRATAP ISBT-PANIPAT

S No	STAGE NAME	KMs	FARE
0	MAHARANA PRATAP ISBT	0	MAHARANA PRATAP ISBT
1	DELHI SINGHU BORDER	28.9	30 DELHI SINGHU BORDER
2	PIAU MANIYARI	31.0	35 5 PIAU MANIYARI
3	RAI	39.0	51 21 16 RAI
4	BHALGARH	41.0	51 21 21 5 BHALGARH
5	KUMASPUR	46.0	61 31 26 16 10 KUMASPUR
6	MURTHAL	49.0	67 37 31 21 16 10 MURTHAL
7	BHIGAN	54.0	77 47 42 26 26 16 10 BHIGAN
8	PIPLI KHERA SONIPAT	60.0	88 57 52 37 36 26 21 10 PIPLI KHERA SONIPAT
9	GANOUR	63.0	93 63 57 42 42 31 26 16 16 GANOUR
10	PATTI KALYANA	70.0	103 73 68 57 52 42 37 31 21 16 PATTI KALYANA
11	SAMALKHA	74.0	109 78 73 63 62 52 47 37 26 21 10 SAMALKHA
12	KARHANS	77.0	114 84 78 68 63 57 52 42 31 26 16 10 KARHANS
13	MACHROLI PANIPAT	81.0	124 94 89 73 73 63 57 52 37 31 21 16 10 MACHROLI PANIPAT
14	PANIPAT (NEW BUS STAND)	86.0	129 99 99 84 78 73 68 57 47 42 31 21 16 10 PANIPAT NEW BUS STAND

S. No	STAGE NAME	KMs	FARE
0	PANIPAT (NEW BUS STAND)	0.0	PANIPAT NEW BUS STAND
1	MACHROLI PANIPAT	5.0	10 MACHROLI PANIPAT
2	KARHANS	9.0	16 10 KARHANS
3	SAMALKHA	12.0	21 16 10 SAMALKHA
4	PATTI KALYANA	16.0	31 21 16 10 PATTI KALYANA
5	GANOUR	23.0	42 31 26 21 16 GANOUR
6	PIPLI KHERA SONIPAT	28.0	47 37 31 26 21 10 PIPLI KHERA SONIPAT
7	BHIGAN	32.0	57 52 42 37 31 16 10 BHIGAN
8	MURTHAL	37.0	68 57 52 47 37 26 21 10 MURTHAL
9	KUMASPUR	40.0	73 63 57 52 42 31 26 16 10 KUMASPUR
10	BHALGARH	45.0	78 73 63 62 52 42 36 26 16 10 BHALGARH
11	RAI	47.0	84 73 68 63 57 42 37 26 21 16 5 RAI
12	PIAU MANIYARI	55.0	99 89 78 78 68 57 52 42 31 26 21 16 PIAU MANIYARI
13	DELHI SINGHU BORDER	57.1	99 94 84 78 73 63 57 47 37 31 21 21 5 DELHI SINGHU BORDER
14	MAHARANA PRATAP ISBT	86.0	129 124 114 109 103 93 88 77 67 61 51 51 35 30 MAHARANA PRATAP ISBT

ISBT कश्मीरी गेट से पानीपत डीटीसी बस रूट की फेयर स्टेज और किराया सूची

यह रूट आईएसबीटी कश्मीरी गेट से वजीराबाद होते हुए जीटीके बाईपास और आगे फेयर स्टेज के अनुसार पानीपत नए बस स्टैंड तक होगा। अभी सुबह और शाम दोनों पारियों में केवल तीन-तीन गाड़ियां ही चलाई गई हैं।

ऑपरेशन प्रहार: अमृतसर रेलवे स्टेशन पर सर्च ऑपरेशन

अमृतसर, 9 फरवरी (साहिल बेरी)

माननीय पुलिस महानिदेशक पंजाब श्री गौरव यादव, आईपीएस के निर्देशों पर तथा पुलिस आयुक्त अमृतसर श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर, आईपीएस की देखरेख में गैंगस्टरों और असामाजिक तत्वों के खिलाफ ऑपरेशन प्रहार – फेज़-II शुरू किया गया है। इसके तहत कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर द्वारा शहर में विशेष सर्च ऑपरेशन और कड़ी निगरानी बढ़ा दी गई है, ताकि अपराधियों की नापाक मंशाओं को नाकाम किया जा सके, कानून-व्यवस्था को प्रभावी ढंग से बनाए रखा जा सके और आम जनता में सुरक्षा की भावना पैदा की जा सके।

इस अभियान के अंतर्गत रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, एयरपोर्ट, मॉल तथा भीड़भाड़ वाले बाजारों में सर्च ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, शहर और बाहरी क्षेत्रों में विभिन्न नाकों पर चौबीसों घंटे सख्त चेकिंग और बैरिकेडिंग की जा रही है।

डीसीपी लॉ एंड ऑर्डर अमृतसर श्री आलम विजय सिंह के नेतृत्व में तथा एडीसीपी सिटी-१ अमृतसर श्री सिरिवेनेला, आईपीएस और एसीपी नॉर्थ अमृतसर श्री गगनदीप सिंह की निगरानी में, स्वाट टीम के साथ मिलकर अमृतसर रेलवे स्टेशन पर विशेष सर्च ऑपरेशन चलाया गया। इस अभियान का उद्देश्य यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना, आपराधिक गतिविधियों पर रोक लगाना तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखना है।

यात्रियों के सामान और बैगों की गहन जांच मेटल डिटेक्टर, स्कैनर और स्निफर डॉग्स की मदद से की गई, ताकि किसी भी प्रतिबंधित वस्तु या अवैध सामग्री का पता लगाया जा सके। ये सुरक्षा उपाय यात्रियों को सुरक्षित वातावरण प्रदान करने और किसी भी संभावित खतरे या अप्रिय घटना को रोकने के लिए किए गए हैं।

इसके अलावा, विशेष अभियान के तहत शहर के अंदरूनी इलाकों और बाहरी क्षेत्रों में भी सघन नाका चेकिंग की जा रही है। आने-जाने वाले सभी वाहनों की बारीकी से जांच की जा रही है और संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की जा रही है। काले शीशों/ग्रिल लगे वाहन, ट्रक्टर, दोपहिया वाहनों पर ट्रिपल राइडिंग, बिना नंबर प्लेट के वाहन, तथा अवैध या घातक हथियारों की जांच को लेकर विशेष कार्रवाई की जा रही है और कानून के अनुसार चालान किए जा रहे हैं।

कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर आम जनता से अपील करती है कि किसी भी प्रकार की अफवाहों पर विश्वास न करें।

सीमा पार तस्करी नेटवर्क से जुड़े पांच आरोपी गिरफ्तार, छह पिस्तौल, 115 ग्राम हेरोइन व ₹11.90 लाख ड्रग मनी बरामद

— वित्तीय लेन-देन व हवाला कनेक्शन की जांच जारी : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 9 फरवरी (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों पर पंजाब को गैंगस्टर मुक्त राज्य बनाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे "गैंग्स्टरां ते वार" अभियान के तहत अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए सीमा पार हथियार और नशा तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। इस कार्रवाई में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से छह अत्याधुनिक पिस्तौल, 115 ग्राम हेरोइन और ₹11.90 लाख की ड्रग मनी बरामद की है। यह जानकारी सोमवार को पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान सिमरनजीत सिंह उर्फ मन्नू (24), गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी (20), सुखराज सिंह उर्फ जोगा (24) और साजन सिंह उर्फ गुरसाजन सिंह उर्फ लड्डा — सभी निवासी गांव रोडा वाला कलां, अमृतसर — तथा मोलकदीप सिंह (23), निवासी गांव रानीके, अमृतसर के रूप में हुई है। बरामद हथियारों में ऑस्ट्रिया निर्मित दो 9 एमएम ग्लॉक पिस्तौल, तुर्की निर्मित एक ज़िगाना पिस्तौल, दो .32 बोर और एक .30 बोर पिस्तौल शामिल हैं, साथ ही 10 जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए हैं। पुलिस ने तस्करी में इस्तेमाल की जा रही उनकी हुंडई क्रेटा कार को भी जब्त कर लिया है।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी सीमा पार तस्करी नेटवर्क से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे और ड्रोन के माध्यम से सीमा पार से हथियार और नशीले पदार्थों की खेप प्राप्त कर रहे थे। मामले में आगे और

पीछे के लिंक स्थापित करने के लिए जांच जारी है।

कार्रवाई का विवरण साझा करते हुए अमृतसर के पुलिस कमिश्नर (सीपी) गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि गुप्त और पुख्ता सूचना के आधार पर पुलिस टीमों ने सिमरनजीत उर्फ मन्नू, मोलकदीप सिंह, गुरप्रीत उर्फ गोपी, सुखराज उर्फ जोगा और साजन उर्फ गुरसाजन उर्फ लड्डा को गिरफ्तार किया और उनके पास से दो .32 बोर पिस्तौल तथा एक कार बरामद की। आगे की पूछताछ के दौरान चार और पिस्तौल, 115 ग्राम हेरोइन और ₹11.90 लाख की ड्रग मनी बरामद की गई, जो उनके संगठित अवैध हथियार और नशा तस्करी गतिविधियों में संलिप्त होने की पुष्टि करती है।

सीपी ने बताया कि जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी सिमरनजीत उर्फ मन्नू, मोलकदीप सिंह और गुरप्रीत सिंह पहले भी एनडीपीएस एक्ट के तहत मामलों में शामिल रह चुके हैं। इसके अलावा, आरोपी सिमरनजीत उर्फ मन्नू दुबई में ट्रक चालक के रूप में भी काम कर चुका है। पुलिस इस नेटवर्क के वित्तीय लेन-देन और हवाला कनेक्शन की गहन जांच कर रही है।

इस संबंध में थाना कैंटोनमेंट, अमृतसर में एफआईआर नंबर 21 दिनांक 03-02-2026 को आर्म्स एक्ट की धारा 25 व 25(8) तथा एनडीपीएस एक्ट की धारा 21बी, 27ए और 29 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023